हिंदी

सुलभभारती

आठवीं कक्षा

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति : आठवीं कक्षा

यह अपेक्षा है कि आठवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित अध्ययन निष्पत्ति विकसित हों ।

विद्‌यार्थी –

08.15.01 विविध विषयों पर आधारित पाठ्‌यसामग्री और अन्य साहित्य पढ़कर चर्चा करते हुए द्रुत वाचन करते हैं तथा आशय को समझते हुए स्वच्छ, शुद्‌ध एवं मानक लेखन तथा केंद्रीय भाव को लिखते हैं ।

08.15.02 हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर तथा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं, सर्वेक्षण, टिप्पणी आदि को प्रस्तुत कर उपलब्ध जानकारी का योग्य संकलन, संपादन करते हुए लेखन करते हैं ।

08.15.03 पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हुए गुट चर्चा में सहभागी होकर उसमें आए विशेष उद्‌धरणों, वाक्यों का अपने बोलचाल तथा संभाषण में प्रयोग कर परिचर्चा, भाषण आदि में अपने विचारों को मौखिक/लिखित ढंग से व्यक्त करते हैं ।

08.15.04 विविध संवेदनशील मुद्‌दों/विषयों जैसे- जाति, धर्म, रंग, लिंग, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न पूछते हैं तथा संबंधित विषयों पर उचित शब्दों का प्रयोग करते हुए धाराप्रवाह संवाद स्थापित करते हैं एवं लेखन करते हैं ।

08.15.05 किसी सुनी हुई कहानी, विचार, तर्क, प्रसंग आदि के भावी प्रसंगों का अर्थ समझते हुए आगामी घटना का अनुमान करते हैं, विशेष बिंदुओं को खोजकर उनका संकलन करते हैं ।

08.15.06 पढ़ी हुई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं तथा किसी परिचित/अपरिचित के साक्षात्कार हेतु प्रश्न निर्मित करते हैं तथा किसी अनुच्छेद का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करते हैं ।

08.15.07 विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त उपयोगी/आलंकारिक शब्द, महान विभूतियों के कथन, मुहावरों/लोकोक्तियों-कहावतों, परिभाषाओं, सूत्रों आदि को समझते हुए सूची बनाते हैं तथा विविध तकनीकों का प्रयोग करके अपने लेखन को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करते हैं ।

08.15.08 किसी पाठ्‌यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर आलेख, अन्य संदर्भ साहित्य का द्‌विभाषिक शब्द संग्रह, ग्राफिक्स, वर्डआर्ट, पिक्टोग्राफ आदि की सहायता से शब्दकोश तैयार करते हैं और प्रसार माध्यमों में प्रकाशित जानकारी की आलंकारिक शब्दावली का प्रभावपूर्ण तथा सहज वाचन करते हैं ।

08.15.09 अपने पाठक, लिखने एवं लेखन के उद्‌देश्य को समझकर अपना मत प्रभावी तरीके से लिखते हैं ।

08.15.10 सुने हुए कार्यक्रम के तथ्यों, मुख्य बिंदुओं, विवरणों एवं पठनीय सामग्री में वर्णित आशय के वाक्यों एवं मुद्‌दों का तार्किक एवं सुसंगति से पुन:स्मरण कर वाचन करते हैं तथा उनपर अपने मन में बनने वाली छबियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेललिपि में अभिव्यक्ति करते हैं ।

08.15.11 भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का यथावत वर्णन, उचित विराम, बलाघात, तान-अनुतान के साथ शुद्‌ध उच्चारण, आरोह-अवरोह, लय-ताल को एकाग्रता से सुनते एवं सुनाते हैं तथा पठन सामग्री में अंतर्निहित आशय, केंद्रीय भाव अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।

08.15.12 विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों, सुने हुए संवाद, वक्तव्य, भाषण के प्रमुख मुद्‌दों को पुन: प्रस्तुत करते हैं तथा उनका उचित प्रारूप में वृत्तांत लेखन करते हैं ।

08.15.13 रूपरेखा तथा शब्द संकेतों के आधार पर आलंकारिक लेखन तथा पोस्टर, विज्ञापन में विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं ।

08.15.14 दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं तथा प्रसार माध्यम से राष्ट्रीय प्रसंग/घटना संबंधी वर्णन सुनते और सुनाते हैं तथा भाषा की भिन्नता का समादर करते हैं ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी

सुलभभारती

आठवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

INLVGR

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१८
दूसरा पुनर्मुद्रण : २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

मुख्य समन्वयक
श्रीमती प्राची रविंद्र साठे

हिंदी भाषा समिति
डॉ.हेमचंद्र वैद्‌य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्‌दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री रामहित यादव – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई–२५

हिंदी भाषा अभ्यासगट
श्री संजय भारद्‌वाज
सौ. रंजना पिंगळे
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ. शुभदा मोघे
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती शारदा बियानी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. वर्षा पुनवटकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शैला ललवाणी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

निमंत्रित सदस्य
श्री ता.का सूर्यवंशी
सौ. संगीता सावंत

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : सौ. पूनम निखिल पोटे
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर, मयूरा डफळ

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2020-21/Qty.
मुद्रक : M/s

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

तुम सब पाँचवीं से सातवीं कक्षा की हिंदी सुलभभारती पाठ्‌यपुस्तक से अच्छी तरह परिचित हो और अब आठवीं हिंदी सुलभभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंग-बिरंगी, अतिआकर्षक यह पुस्तक तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि तुम्हें कविता, गीत, गजल सुनना-पढ़ना प्रिय लगता है । कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । तुम्हारी इन भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पाठ्‌यपुस्तक में कविता, गीत, गजल, पद, दोहे, नई कविता, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, लघुकथा, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, साक्षात्कार, भाषण, संवाद, पत्र आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । ये विधाएँ मनोरंजक होने के साथ-साथ ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों / क्षमताओं के विकास, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक होंगी । इन रचनाओं के चयन के समय आयु, रुचि, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्तर का सजगता से ध्यान रखा गया है ।

अंतरजाल एवं डिजिटल दुनिया के प्रभाव, नई शैक्षिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टि को समक्ष रखकर 'श्रवणीय', 'संभाषणीय' 'पठनीय', 'लेखनीय', 'मैंने समझा', 'कृति पूर्ण करो', 'भाषा बिंदु' आदि के माध्यम से पाठ्‌यक्रम को पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारी कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता को ध्यान में रखते हुए 'स्वयं अध्ययन', 'उपयोजित लेखन', 'मौलिक सृजन', 'कल्पना पल्लवन' आदि कृतियों को अधिक व्यापक एवं रोचक बनाया गया है । इनका सतत अभ्यास एवं उपयोग अपेक्षित है । मार्गदर्शक का सहयोग लक्ष्य तक पहुँचाने के मार्ग को सहज और सुगम बना देता है । अतः अध्ययन अनुभव की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग और मार्गदर्शन तुम्हारे लिए निश्चित ही सहायक सिद्‌ध होंगे । आपकी हिंदी भाषा और ज्ञान में अभिवृद्‌धि के लिए 'ऐप' एवं 'क्यू.आर.कोड,' के माध्यम से अतिरिक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी । अध्ययन अनुभव हेतु इनका निश्चित ही उपयोग हो सकेगा ।

आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि तुम सब पाठ्‌यपुस्तक का समुचित उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि दिखाते हुए आत्मीयता के साथ इसका स्वागत करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ अप्रैल २०१८, अक्षयतृतीया
भारतीय सौर : २८ चैत्र १९४०

❋ अनुक्रमणिका ❋

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	हे मातृभूमि !	कविता	रामप्रसाद 'बिस्मिल'	१-२
२.	वारिस कौन ?	संवादात्मक कहानी	विभा रानी	३-५
३.	नाखून क्यों बढ़ते हैं ?	वैचारिक निबंध	आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी	६-८
४.	गाँव-शहर	नवगीत	प्रदीप शुक्ल	९-१०
५.	मधुबन	साक्षात्कार	अनुराग वर्मा	११-१३
६.	जरा प्यार से बोलना सीख लीजे	गजल	रमेश दत्त शर्मा	१४-१५
७.	मेरे रजा साहब	संस्मरण	सुजाता बजाज	१६-१८
८.	पूर्ण विश्राम	हास्य-व्यंग्य कहानी	सत्यकाम विद्‌यालंकार	१९-२२
९.	अनमोल वाणी	दोहे पद	संत कबीर भक्त सूरदास	२३-२४

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	धरती का आँगन महके	नई कविता	डॉ. प्रकाश दीक्षित	२५-२६
२.	दो लघुकथाएँ	लघुकथा	हरि जोशी	२७-२९
३.	लकड़हारा और वन	एकांकी	अरविंद भटनागर	३०-३३
४.	सौहार्द-सौमनस्य	नये दोहे	जहीर कुरैशी	३४-३५
५.	खेती से आई तब्दीलियाँ	पत्र	पं. जवाहरलाल नेहरू	३६-३८
६.	अंधायुग	गीतिनाट्‌य का अंश	डॉ. धर्मवीर भारती	३९-४१
७.	स्वराज्य मेरा जन्मसिद्‌ध अधिकार है	भाषण	लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक	४२-४४
८.	मेरा विद्रोह	मनोवैज्ञानिक कहानी	सूर्यबाला	४५-४९
९.	नहीं कुछ इससे बढ़कर	गीत	सुमित्रानंदन पंत	५०-५१
	व्याकरण, रचना विभाग एवं भावार्थ			५२-५४

१. हे मातृभूमि !

– *रामप्रसाद 'बिस्मिल'*

हे मातृभूमि ! तेरे चरणों में शीश नवाऊँ ।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊँ ।।

माथे पे तू हो चंदन, छाती पे तू हो माला;
जिह्‌वा पे गीत तू हो मेरा, तेरा ही नाम गाऊँ ।।

जिससे सपूत उपजें, श्री राम-कृष्ण जैसे;
उस धूल को मैं तेरी निज शीश पे चढ़ाऊँ ।।

माई ! समुद्र जिसकी पद रज को नित्य धोकर;
करता प्रणाम तुझको, मैं वे चरण दबाऊँ ।।

सेवा में तेरी माता ! मैं भेदभाव तजकर;
वह पुण्य नाम तेरा, प्रतिदिन सुनूँ-सुनाऊँ ।।

तेरे ही काम आऊँ, तेरा ही मंत्र गाऊँ ।
मन और देह तुम पर बलिदान मैं जाऊँ ।।

—०—

परिचय

जन्म : १८९७, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)
मृत्यु : १९२७, गोरखपुर (उ.प्र.)
परिचय : रामप्रसाद 'बिस्मिल' भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के कवि, अनुवादक, बहुभाषाविद व साहित्यकार भी थे । आपने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। 'सरफरोशी की तमन्ना...' आपकी प्रसिद्‌ध रचना है । 'बिस्मिल' उपनाम के अतिरिक्त आप 'राम' और 'अज्ञात' के नाम से भी लेख व कविताएँ लिखते थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मन की लहर', 'आत्मकथा' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता में क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी कवि रामप्रसाद 'बिस्मिल' जी ने मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम एवं भक्तिभाव को व्यक्त किया है । यहाँ आपने मातृभूमि की सेवा करने और देशहित में निछावर हो जाने की लालसा व्यक्त की है ।

कल्पना पल्लवन

'मातृभूमि की सेवा में जीवन अर्पण करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है,' इस कथन पर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

नवाना = झुकाना	**रज** = धूल
शीश = सिर	**बलिदान** = प्राणाहुति, निछावर
जिह्वा = जीभ	**देह** = शरीर

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) कृति पूर्ण करो :

मातृभूमि की विशेषताएँ

१. ________

२. ________

३. ________

४. ________

(२) कृति पूर्ण करो :

कवि मातृभूमि के प्रति अर्पित करना चाहता है

[ ] [ ]

(३) एक शब्द में उत्तर लिखो :

१. कवि की जिह्वा पर इसके गीत हों –

२. मातृभूमि के चरण धोने वाला –

३. मातृभूमि के सपूत –

४. प्रतिदिन सुनने/सुनाने योग्य नाम –

५. मातृभूमि के चरणों में इसे नवाना है –

(४) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

सेवा में तेरी -------------------;

------------------------- ।।

------------------------- ।

--------------- बलिदान मैं जाऊँ ।।

भाषा बिंदु

निम्न विरामचिह्नों के नाम लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग करो :

।   ;   ?   -   ?   !   ‘ ’   “ ”   —

उपयोजित लेखन

शब्दों के आधार पर कहानी लिखो :

ग्रंथालय, स्वप्न, पहेली, काँच

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

‘विकास की ओर बढ़ता हुआ भारत देश’ से संबंधित महत्त्वपूर्ण कार्यों की सूची बनाओ ।

२. वारिस कौन ?

– विभा रानी

एक राजा था । उसके चार बेटियाँ थीं । राजा ने सोचा कि इन चारों में से जो सबसे बुद्‌धिमती होगी, उसे ही अपना राजपाट सौंपेगा । इसका फैसला कैसे हो ? वह सोचने लगा । अंत में उसे एक उपाय सूझ गया ।

उसने एक दिन चारों बेटियों को अपने पास बुलाया । सभी को गेहूँ के सौ-सौ दाने दिए और कहा, ''इसे तुम अपने पास रखो, पाँच साल बाद मैं जब इन्हें माँगूँगा तब तुम सब मुझे वापस कर देना ।''

गेहूँ के दाने लेकर चारों बहनें अपने-अपने कमरे में लौट आईं । बड़ी बहन ने उन दानों को खिड़की के बाहर फेंक दिया । उसने सोचा, 'आज से पाँच साल बाद पिता जी को गेहूँ के इन दानों की याद रहेगी क्या ? और जो याद भी रहा तो क्या हुआ..., भंडार से लेकर दे दूँगी ।'

दूसरी बहन ने दानों को चाँदी की एक डिब्बी में डालकर उसे मखमल के थैले में बंद करके सुरक्षा से अपनी संदूकची में डाल दिया । सोचा, 'पाँच साल बाद जब पिता जी ये दाने माँगेंगे, तब उन्हें वापस कर दूँगी ।'

तीसरी बहन बस सोचती रही कि इसका क्या करूँ । चौथी और छोटी बहन तनिक बच्ची थी । शरारतें करना उसे बहुत पसंद था । उसे गेहूँ के भुने दाने भी बहुत पसंद थे । उसने दानों को भुनवाकर खा डाला और खेल में मग्न हो गई ।

तीसरी राजकुमारी को इस बात का यकीन था कि पिता जी ने उन्हें यूँ ही ये दाने नहीं दिए होंगे । जरूर इसके पीछे कोई मकसद होगा । पहले तो उसने भी अपनी दूसरी बहनों की तरह ही उन्हें सहेजकर रख देने की सोची, लेकिन वह ऐसा न कर सकी । दो-तीन दिनों तक वह सोचती रही, फिर उसने अपने कमरे की खिड़की के पीछेवाली जमीन में वे दाने बो दिए । समय पर अंकुर फूटे । पौधे तैयार हुए, दाने निकले । राजकुमारी ने तैयार फसल में से दाने निकाले और फिर से बो दिए । इस तरह पाँच वर्षों में उसके पास ढेर सारा गेहूँ तैयार हो गया ।

पाँच साल बाद राजा ने फिर चारों बहनों को बुलाया और कहा- ''आज से पाँच साल पहले मैंने तुम चारों को गेहूँ के सौ-सौ दाने दिए थे और कहा था कि पाँच साल बाद मुझे वापस करना । कहाँ हैं वे दाने ?''

बड़ी राजकुमारी भंडार घर जाकर गेहूँ के दाने ले आई और राजा को दे दिए । राजा ने पूछा, ''क्या ये वही दाने हैं जो मैंने तुम्हें दिए थे ?''

परिचय

जन्म : १९५९, मधुबनी (बिहार)

परिचय : बहुआयामी प्रतिभा की धनी विभा रानी हिंदी व मैथिली की राष्ट्रीय स्तर की लेखिका हैं । आपने कहानी, गीत, अनुवाद, लोक साहित्य एवं नाट्य लेखन में प्रखरता से अपनी कलम चलाई है । आप समकालीन फिल्म, महिला व बाल विषयों पर लोकगीत और लोक साहित्य के क्षेत्र में निरंतर काम कर रही है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'चल खुसरो घर अपने', 'मिथिला की लोककथाएँ', 'गोनू झा के किस्से' (कहानी संग्रह), 'अगले-जन्म मोहे बिटिया न कीजो', (नाटक) 'समरथ-CAN' (द्विभाषी हिंदी-अंग्रेजी का अनुवाद), 'बिल टेलर की डायरी' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत संवादात्मक कहानी के माध्यम से विभा रानी जी का कहना है कि हमें उत्तम फल प्राप्त करने के लिए समय और साधनों का सदुपयोग करना चाहिए । जो ऐसा करता है, वही जीवन में सफल होता है ।

मौलिक सृजन

अपने आस-पास घटित चतुराई से संबंधित घटना लिखो ।

पहले तो राजकुमारी ने 'हाँ' कह दिया । मगर राजा ने फिर कड़ककर पूछा, तब उसने सच्ची बात बता दी ।

राजा ने दूसरी राजकुमारी से पूछा - ''तुम्हारे दाने कहाँ हैं ?''

दूसरी राजकुमारी अपनी संदूकची में से मखमल के खोलवाली डिब्बी उठा लाई, जिसमें उसने गेहूँ के दाने सहेजकर रखे थे । राजा ने उसे खोलकर देखा - दाने सड़ गए थे ।

तीसरी राजकुमारी से पूछा - ''तुमने क्या किया उन दानों का ?''

तीसरी ने कहा - ''मैं इसका उत्तर आपको अभी नहीं दूँगी, क्योंकि जवाब पाने के लिए आपको यहाँ से दूर जाना पड़ेगा और मैं वहाँ आपको कल ले चलूँगी ।''

राजा ने अब चौथी और सबसे छोटी राजकुमारी से पूछा । उसने उसी बेपरवाही से जवाब दिया-''उन दानों की कोई कीमत है पिता जी ? वैसे तो ढेरों दाने भंडार में पड़े हैं । आप तो जानते हैं न, मुझे गेहूँ के भुने दाने बहुत अच्छे लगते हैं, सो मैं उन्हें भुनवाकर खा गई । आप भी पिता जी, किन-किन चक्करों में पड़ जाते हैं ।''

सभी के उत्तर से राजा को बड़ी निराशा हुई । चारों में से अब उसे केवल तीसरी बेटी से ही थोड़ी उम्मीद थी ।

दूसरे दिन तीसरी राजकुमारी राजा के पास आई । उसने कहा- ''चलिए पिता जी, आपको मैं दिखाऊँ कि गेहूँ के वे दाने कहाँ हैं ?''

राजा रथ पर सवार हो गया । रथ महल, नगर पार करके खेत की तरफ बढ़ चला । राजा ने पूछा, ''आखिर कहाँ रख छोड़े हैं तुमने वे सौ दाने ? इन सौ दानों के लिए तुम मुझे कहाँ-कहाँ के चक्कर लगवाओगी ?''

तब तक रथ एक बड़े-से हरे-भरे खेत के सामने आकर रुक गया । राजा ने देखा - सामने बहुत बड़े खेत में गेहूँ की फसल थी । उसकी बालियाँ हवा में झूम रही थीं, जैसे राजा को कोई खुशी भरा गीत सुना रही हों । राजा ने हैरानी से राजकुमारी की ओर देखा । राजकुमारी ने कहा- ''पिता जी, ये हैं वे सौ दाने, जो आज लाखों-लाख दानों के रूप में आपके सामने हैं । मैंने उन सौ दानों को बोकर इतनी अधिक फसल तैयार की है ।''

राजा ने उसे गले लगा लिया और कहा- ''अब मैं निश्चिंत हो गया । तुम ही मेरे राज्य की सच्ची उत्तराधिकारी हो ।''

-o-

संभाषणीय

'उत्तर भारत की नदियों में बारहों मास पानी रहता है' इसके कारणों की जानकारी प्राप्त करके कक्षा में बताओ ।

श्रवणीय

भाषा की भिन्नता का आदर करते हुए कोई लोकगीत अपने सहपाठियों को सुनाओ ।

पठनीय

अपने परिसर की किसी शैक्षिक संस्था की रजत महोत्सवी पत्रिका का वाचन करो ।

लेखनीय

मराठी समाचार पत्र या बालपत्रिका के किसी परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद करो ।

शब्द वाटिका

तनिक = थोड़ा
मकसद = उद्‌देश्य
खोल = आवरण
उम्मीद =आशा
उत्तराधिकारी = वारिस

मुहावरे

चक्कर में पड़ जाना =दुविधा में पड़ना
गले लगाना = प्यार से मिलना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) उत्तर लिखो :

गेहूँ के दानों का चारों बहनों ने किया-

(२) उचित घटनाक्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखो :

१. सभी के उत्तर से राजा को बड़ी निराशा हुई ।
२. रथ एक बड़े-से हरे-भरे खेत के सामने रुक गया ।
३. राजा ने हैरानी से राजकुमारी की ओर देखा ।
४. अंत में उसे एक उपाय सूझ गया ।

(३) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

१. जरूर इसके पीछे कोई ------- होगा । (उद्‌देश्य/हेतु/मकसद)
२. सो मैं उन्हें ------- खा गई । (भिगोकर/भुनवाकर/पकाकर)
३. तुम ही मेरे राज्य की सच्ची ------- हो । (रानी/युवराज्ञी/उत्तराधिकारी)
४. इसे तुम अपने पास रखो, ------- साल बाद मैं इन्हें माँगूँगा । (चार/सात/पाँच)

(४) परिणाम लिखो :

१. गेहूँ के दानों को बोने का परिणाम-
२. सभी के उत्तर सुनकर राजा पर हुआ परिणाम-
३. दूसरी राजकुमारी का संदूकची में दाने रखने का परिणाम-
४. पहली राजकुमारी को कड़ककर पूछने का परिणाम -

भाषा बिंदु रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य पाठों से ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन अपने मित्र/सहेली को दीपावली की छुट्टियों में अपने घर निमंत्रित करने वाला पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन बीरबल की बौद्‌धिक चतुराई की कहानी के मुद्‌दों का फोल्डर बनाकर कहानी प्रस्तुत करो ।

IP5HK2

३. नाखून क्यों बढ़ते हैं ?

– आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी

परिचय

जन्म : १९०७, बलिया (उ.प्र.)
मृत्यु : १९८९ (उ.प्र.)
परिचय : द्‌विवेदी जी हिंदी साहित्य के मौलिक निबंधकार, उत्कृष्ट समालोचक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार हैं । आपका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और आपका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था । आप हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के विद्‌वान थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अशोक के फूल', 'कल्पलता' (निबंध), 'बाणभट्ट की आत्मकथा,' 'पुनर्नवा' (उपन्यास) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत वैचारिक निबंध में आचार्य हजारीप्रसाद ने नाखून बढ़ने को पशुता का चिह्न माना है । नाखून पशुता, बुराइयों का प्रतीक है । आपका कहना है कि जिस तरह नाखून बढ़ने पर हम उसे काट देते हैं, ठीक उसी तरह यदि किसी में बुरी आदतें आ जाएँ तो उन्हें त्याग देना चाहिए ।

मौलिक सृजन

सद्‌गुणों और दुर्गुणों में अंतर लिखो ।

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं । अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है । मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ लिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका । हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं । काट दीजिए, वे चुपचाप दंड स्वीकर कर लेंगे; पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति छूटते ही फिर जैसे के तैसे हो जाते हैं । आखिर ये इतने बेहया क्यों हैं ?

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; वनमानुष जैसा । उसे नाखून की जरूरत थी । उसकी जीवन रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे । असल में वही उसके अस्त्र थे । दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था । धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा । उसने हड्‌डियों के भी हथियार बनाए । मनुष्य धीरे-धीरे और आगे बढ़ा । उसने धातु के हथियार बनाए । इतिहास आगे बढ़ा । कभी-कभी मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून न काटने पर डाँटता है । वे रोज बढ़ते हैं । मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता । ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं । मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती ।

अगर आदमी अपने शरीर की, मन की और वाक की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले । मनुष्य की नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है । उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है ।

मेरा मन पूछता है- मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है ? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर ? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर ? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य जाति से ही प्रश्न किया है- जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं ? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं । मैं भी पूछता हूँ-जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं ? ये हमारी पशुता की निशानी हैं । स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में

सुखी कैसे बनाया जाए । हमारी परंपरा महिमामयी और संस्कार उज्ज्वल हैं क्योंकि अपने आप पर, अपने आप द्‌वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है ।

मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है ! उसमें संयम है, दूसरे के सुख-दुख के प्रति समवेदना है, श्रद्‌धा है, तप है, त्याग है । इसीलिए मनुष्य झगड़े-टंटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है । वचन, मन एवं शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत मानता है ।

ऐसा कोई दिन आ सकता है जब मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है । उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी । शायद उस दिन वह मरणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा । नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है ।

मनुष्य में जो घृणा है जो अनायास बिना सिखाए आ जाती है, वह पशुत्व का द्‌योतक है । अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है । बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं ।

मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से दे देने में है । नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है । उसको काट देना उस स्वनिर्धारित आत्मबंधन का फल है जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है ।

नाखून बढ़ते हैं तो बढ़ें, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा ।

— ० —

श्रवणीय

मानवीय मूल्य वाले शब्दों का चार्ट बनाओ । इन शब्दों में से किसी एक शब्द से संबंधित कोई प्रसंग/घटना सुनो और सुनाओ ।

संभाषणीय

विविध संवेदनशील मुद्‌दों/विषयों (जैसे-जाति, धर्म, रंग, लिंग, रीति-रिवाज) के बारे में अपने शिक्षक से प्रश्न पूछो ।

लेखनीय

'सुरक्षा हेतु शस्त्रों की भरमार' विषय के पक्ष-विपक्ष में अपने विचार लिखो ।

पठनीय

पाठ्‌यसामग्री और अन्य पठन सामग्री का द्रुत वाचन करके उनमें आए विचारों पर सहपाठियों से चर्चा करो ।

शब्द वाटिका

वनमानुष = बंदर की एक प्रजाति
पाशवी = पशुवत
निर्बोध = अज्ञान
आचरण = बर्ताव, व्यवहार
लुप्त = गायब
घृणा = नफरत
द्योतक = प्रतीक
चरितार्थता = सार्थकता

✻ **सूचनानुसार कृतियाँ करो :–**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

मनुष्य में पशुत्व से भिन्नता दर्शाने वाली बातें

↓ ______________

↓ ______________

↓ ______________

↓ ______________

(२) प्रतीक लिखो :

नाखूनों को बढ़ाना	नाखूनों को काटना
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

(३) उत्तर लिखो :

१. मनुष्य की चरितार्थता इन दो बातों में है :–
(अ) ------------------------- (आ)-----------------------------
२. मनुष्य का स्वधर्म यह है :
(अ) ------------------------- (आ)-----------------------------
३. मनुष्य को नाखूनों की जरूरत तब थी :
(अ) ------------------------- (आ)-----------------------------

भाषा बिंदु

(१) निम्न शब्दों के लिंग पहचानकर लिखो –
आत्मा, व्यक्ति, बादल, तार, नोट, नाखून, पुस्तक, तकिया, दही
(२) अर्थ के अनुसार वाक्यों के प्रकार ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन

किसी मौलिक मराठी विज्ञापन का हिंदी में अनुवाद करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित मुहावरों की अर्थ सहित सूची बनाओ ।

IPEILP

४. गाँव-शहर

– *प्रदीप शुक्ल*

बदला-बदला-सा मौसम है
बदले-से लगते हैं सुर ।
दीदा फाड़े शहर देखता
गाँव देखता टुकुर-टुकुर ।

तिल रखने की जगह नहीं है
शहर ठसाठस भरे हुए ।
उधर गाँव में पीपल के हैं
सारे पत्ते झरे हुए ।

मेट्रो के खंभे के नीचे
रात गुजारे परमेसुर ।
दीदा फाड़े शहर देखता
गाँव देखता टुकुर-टुकुर ।

इधर शहर में सारा आलम
आँख खुली बस दौड़ रहा ।

वहाँ रेडियो पर स्टेशन
रामदीन है जोह रहा ।
उनकी बात सुनी है जबसे
दिल करता है धुकुर-पुकुर ।

सुरसतिया के दोनों लड़के
सूरत गए कमाने ।
गेहूँ के खेतों में लेकिन
गिल्ली लगीं घमाने ।

लँगड़ाकर चलती है गैया
सड़कों ने खा डाले खुर ।
दीदा फाड़े शहर देखता
गाँव देखता टुकुर-टुकुर ।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १९६७, लखनऊ (उ.प्र.)
परिचय : कवि प्रदीप शुक्ल जी को हिंदी कविता के प्रति विशेष श्रद्‌धा है । आप कविता को एक साधना के रूप में देखते हैं । हिंदी की विविध पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ छपती रहती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अम्मा रहती गाँव में' (नवगीत संग्रह), 'गुल्लू का गाँव' (बालगीत संग्रह) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत नवगीत में कवि प्रदीप शुक्ल जी ने गाँव और शहर के दर्द को दर्शाया है । यहाँ शहरों की भीड़-भाड़, भागम-भाग, गाँव से शहरों की तरफ पलायन, गाँवों का शहरीकरण आदि का बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया है ।

कल्पना पल्लवन

'भारतीय संस्कृति के दर्शन देहातों में होते हैं' इस तथ्य पर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

दीदा = आँख, दृष्टि, निगाह
परमेसुर = परमेश्वर (एक नाम)
आलम = दुनिया, जगत, जहान
गिल्ली = गिलहरी
गैया = गाय
घमाना = धूप खाना

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) तुलना करो :

गाँव	शहर
--------	--------
--------	--------
--------	--------

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. मेट्रो	------	गाँव
२. पीपल	------	कस्बा
		शहर

(३) कृति पूर्ण करो :

१. गाँव का देखना — ☐

२. शहर का देखना — ☐

(४) एक शब्द में उत्तर लिखो :

१. लँगड़ाकर चलने वाली –
२. पत्ते झरा हुआ वृक्ष –
३. बदले-से लगते हैं –
४. जहाँ तिल रखने की जगह नहीं है ।

भाषा बिंदु पाठ्यपुस्तक के पाठों से विलोम और समानार्थी शब्द ढूँढ़कर उनकी सूची बनाओ और उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन वृक्ष और पंछी के बीच का संवाद लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन यातायात के नियम, सांकेतिक चिह्न एवं हेल्मेट की आवश्यकता आदि के चार्टस बनाकर विद्यालय की दीवारें सुशोभित करो ।

IPNENC

५. मधुबन

– अनुराग वर्मा

सुबह का समय था । मैं डॉक्टर रामकुमार वर्मा जी के प्रयाग स्टेशन स्थित निवास ''मधुबन'' की ओर पूरी रफ्तार से चला जा रहा था क्योंकि १० बजे उनसे मिलने का समय तय था ।

वैसे तो मैंने डॉक्टर साहब को विभिन्न उत्सवों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में देखा था, परंतु इतने निकट से मुलाकात करने का यह मेरा पहला अवसर था । मेरे दिमाग में विभिन्न विचारों का ज्वार उठ रहा था– कैसे होंगे डॉक्टर साहब, कैसा व्यवहार होगा उस साहित्य मनीषी का, आदि । इन तमाम उठते और बैठते विचारों को लिए मैंने उनके निवास स्थान 'मधुबन' में प्रवेश किया । काफी साहस करके दरवाजे पर लगी घंटी बजाई । नौकर निकला और पूछ बैठा, ''क्या आप अनुराग जी हैं ?'' मैंने उत्तर में सिर्फ 'हाँ' कहा । उसने मुझे ड्राइंग रूम में बिठाया और यह कहते हुए चला गया कि ''डॉक्टर साहब आ रहे हैं ।'' इतने में डॉक्टर साहब आ गए । ''अनुराग जी, कैसे आना हुआ ?'' आते ही उन्होंने पूछा ।

मैंने कहा, ''डॉक्टर साहब, कुछ प्रसंग जो आपके जीवन से संबंधित हैं और उनसे आपको जो महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ मिली हों उन्हीं की जानकारी हेतु आया था ।''

डॉक्टर साहब ने बड़ी सरलता से कहा, 'अच्छा, तो फिर पूछिए ।'

प्रश्न : डॉक्टर साहब, काव्य-रचना की प्रेरणा आपको कहाँ से और कैसे प्राप्त हुई ? इस संदर्भ में कोई ऐसा प्रसंग बताने का कष्ट करें जिसने आपके जीवन के अंतरंग पहलुओं को महत्वपूर्ण मोड़ दिया हो।

उत्तर : पहले तो मेरे जीवन में समाज की अंध व्यवस्था के प्रति विद्रोह अपने आप ही उदित हुआ । सन १९२१ में जब मैं केवल साढ़े पंद्रह वर्ष का था, गांधीजी के असहयोग आंदोलन में पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवधानों से संघर्ष करते हुए मैंने भाग लिया । उस समय स्कूल छोड़ने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती थी मगर मध्य प्रदेश के अंतर्गत नरसिंहपुर में मौलाना शौकत अली साहब आए और बोले, ''गांधीजी ने कहा है कि अंग्रेजी की तालीम गुलाम बनाने का एक नुस्खा है ।'' तत्पश्चात आवाज तेज करते हुए कहने लगे, ''है कोई माई का लाल जो कह दे कि मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा ।'' मैंने अपनी माँ के आगे बड़ी ही श्रद्‌धा से स्कूल न जाने की घोषणा कर दी । सभी लोग सकते में आ गए । बात भी अजीब थी कि उन दिनों एक डिप्टी कलेक्टर का लड़का विद्रोह कर जाए। लोगों ने बहुत समझाया, पिता जी की

परिचय

परिचय : अनुराग वर्मा जी ने हिंदी में विपुल लेखन किया है । आपकी भाषा धारा प्रवाह, सरल एवं आशय संपन्न होती है । आप हिंदी के जाने-माने लेखक हैं ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पाठ में श्री अनुराग वर्मा ने प्रसिद्‌ध लेखक डॉ. रामकुमार वर्मा जी का साक्षात्कार लिया है । यहाँ अनुराग जी ने डॉ. वर्मा जी से उनकी काव्य रचना की प्रेरणा, लौकिक-पारलौकिक प्रेम, देश की राजनीतिक स्थिति आदि पर प्रश्न पूछें हैं । डॉ. वर्मा जी ने इन प्रश्नों के बड़ी बेबाकी से उत्तर दिए हैं ।

मौलिक सृजन

'कहानियों/कविताओं द्‌वारा मनोरंजन तथा ज्ञान प्राप्ति होती है,' इसपर अपने मत लिखो ।

नौकरी की बात कही परंतु मैं घर से निकल पड़ा क्योंकि गांधीजी का आदेश मानना था । इस प्रकार सर्वप्रथम मैंने सत्य एवं देश के लिए विद्रोह किया । तब तक मैं सोलह वर्ष का हो चुका था और राष्ट्रीय ध्वज लेकर नगर में प्रभात फेरी भी किया करता था । यह बात सन १९२१ की ही है और इसी समय मैंने देशप्रेम पर एक कविता लिखी । यही मेरी कविता का मंगलाचरण था ।

प्रश्न : आप मध्य प्रदेश से उत्तर प्रदेश कैसे आए ?

उत्तर : हिंदी प्रेम ने मुझे मध्य प्रदेश से उत्तर प्रदेश आने को प्रेरित किया क्योंकि उन दिनों नागपुर विश्वविद्यालय में हिंदी नहीं थी । सन १९२५ में मैंने इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की, तत्पश्चात उच्च शिक्षा हेतु प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया । मैंने इसी विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की ।

मैंने देखा कि डॉक्टर साहब के चेहरे पर गंभीरता के भाव साफ प्रतिबिंबित हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे अपने अतीत में खो-से गए हैं । मैंने पुनः सवाल किया ।

प्रश्न : डॉक्टर साहब, प्रायः ऐसा देखा गया है कि कवियों एवं लेखकों के जीवन में उनका लौकिक प्रेम, पारलौकिक प्रेम में बदल गया । क्या आपके साथ भी ऐसा हुआ है ?

उत्तर : अनुराग जी, प्रेम मनुष्य की एक प्राकृतिक प्रवृत्ति है । सन १९२६ में मेरा विवाह हो गया और मैं गृहस्थ जीवन में आ गया । अब मुझे सात्विकता एवं नैतिकता से प्रेम हो गया । मैंने इसी समय, यानी सन १९३० में ''कबीर का रहस्यवाद'' लिखा । इतना अवश्य है कि मेरे जीवन के कुछ अनुभव कविता के माध्यम से प्रेषित हुए। मुझे बचपन से ही अभिनय का शौक था और प्रायः उत्सवों के अवसर पर नाटकों में भाग भी लिया करता था ।

मैंने बात आगे बढ़ाई और पूछा ।

प्रश्न : डॉक्टर साहब, देश की राजनीतिक स्थिति के बारे में आपकी क्या राय है ?

उत्तर : मैं राजनीति से हमेशा दूर रहा क्योंकि आज की राजनीति में स्थिरता का अभाव है । यद्यपि मैं नेहरू जी, शास्त्री जी, इंदिरा जी एवं मोरारजी भाई से मिल चुका हूँ और उनसे मेरा परिचय भी है, परंतु मैंने राजनीति से अपने आपको सदा दूर रखा, मुझे राजनीति में कोई रुचि नहीं है । मैं साहित्यकार हूँ, और साहित्य चिंतन में विश्वास रखता हूँ ।

इतना कहते हुए डॉक्टर साहब ने घड़ी देखी और बोले, ''अनुराग जी, मुझे साढ़े ग्यारह बजे एक कार्य से जाना है ।'' तत्पश्चात उन्होंने मुझे एक कुशल अभिभावक की भाँति आशीर्वाद देते हुए विदा किया ।

---o---

श्रवणीय

यू-ट्यूब पर संत कबीर के दोहे सुनो और सुनाओ ।

संभाषणीय

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' पर पथनाट्य प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

साक्षात्कार लेने के लिए किन-किन प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग हो सकता है, सूची तैयार करो । प्रत्येक शब्द से एक-एक प्रश्न बनाकर लिखो ।

पठनीय

द्विभाषी शब्दकोश पढ़कर उसके आधार पर किसी एक पाठ का द्विभाषी शब्दकोश बनाओ ।

शब्द वाटिका

संगोष्ठी = किसी विषय पर विशेषज्ञों का चर्चासत्र

तालीम = शिक्षा, उपदेश

मुहावरे

ज्वार उठना = विचारों की हलचल

सकते में आना = घबराना, अति भयभीत होना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

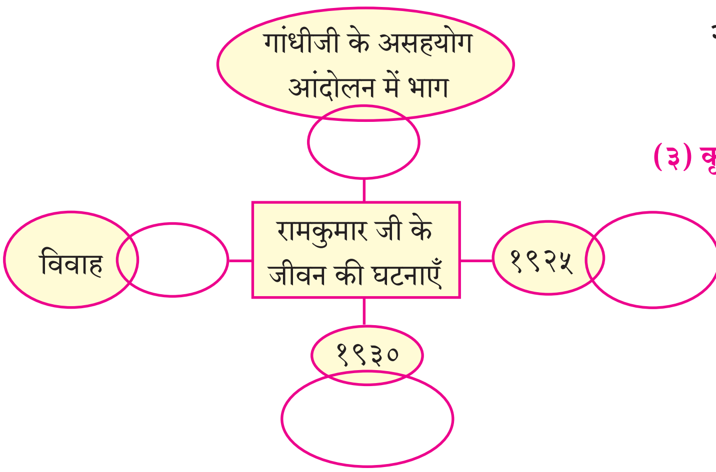

(२) कारण लिखो :

१. डॉक्टर साहब का राजनीति से दूर रहने का कारण-

२. डॉक्टर साहब का मध्यप्रदेश से उत्तर प्रदेश आने के लिए प्रेरित होने का कारण -

(३) कृति करो :

(४) कृति पूर्ण करो :

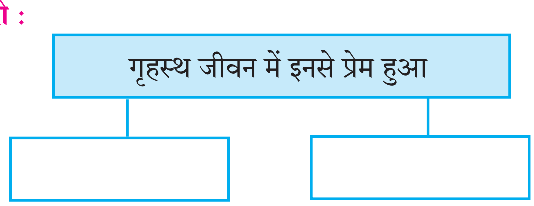

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों से कृदंत/तद्धित बनाओ :

मिलना, ठहरना, इनसान, शौक, देना, कहना, भाव, बैठना, घर, धन

उपयोजित लेखन

अपने विद्यालय में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह का प्रमुख मुद्दों सहित वृत्तांत लेखन करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

अंतरजाल से डॉ. रामकुमार वर्मा जी से संबंधित अन्य साहित्यिक जानकारियाँ प्राप्त करो ।

IXN6HH

६. जरा प्यार से बोलना सीख लीजे

– रमेश दत्त शर्मा

परिचय

जन्म : १९३९, जलेसर, एटा (उ.प्र)
मृत्यु: २०१२
परिचय : शर्मा जी पचास वर्षों से पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और टी.वी. के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार-प्रसार करते रहे। आपको विज्ञान लेखन में दर्जन से अधिक पुरस्कार मिल चुके हैं । आप कक्षा सातवीं-आठवीं से ही स्थानीय मुशायरों में 'चचा जलेसरी' के नाम से शिरकत करने लगे थे ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गजल के शेरों में शर्मा जी ने प्रेम से बोलना, सही समय पर बोलना, बोलने से पहले विचार करना, आत्मनियंत्रण रखना, मधुरभाषी होना आदि गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि हमेशा होंठ सीकर बैठना उचित नहीं है । आवश्यकतानुसार आक्रोश प्रकट करना भी जरूरी है ।

कल्पना पल्लवन

'वाणी की मधुरता सामने वाले का मन जीत लेती है ।' इस तथ्य पर अपने विचार लिखो ।

वाणी में शहद घोलना सीख लीजे,
जरा प्यार से बोलना सीख लीजे ।

चुप रहने के, यारों बड़े फायदे हैं,
जुबाँ वक्त पर खोलना सीख लीजे ।

कुछ कहने से पहले जरा सोचिए,
खयालों को खुद तौलना सीख लीजे ।

तू-तड़ाक हो या फिर हो तू-तू मैं-मैं,
अपने आपको टोकना सीख लीजे ।

पटाखे की तरह फटने से पहले,
रोशनी के रंग घोलना सीख लीजे ।

कटु वचन तो सदा बोते हैं काँटे,
मीठी बोली के गुल रोपना सीख लीजे ।

बात बेबात कोई चुभने लगे तो,
बदलकर उसे मोड़ना सीख लीजे ।

ये किसने कहा होंठ सीकर के बैठो,
जरूरत पे मुँह खोलना सीख लीजे ।

——०——

शब्द वाटिका

बेबात = बिना बात
सीकर = सिलकर
जुबाँ = जीभ, मुँह
रोपना = बोना

✲ सूचनानुसार कृतियाँ करो :–

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

कवि ने इन बातों को सीख लेने को कहा है
↓ ____________
↓ ____________
↓ ____________
↓ ____________

(२) उत्तर लिखो :

१. काँटे बोने वाले –
२. चुभने वाली –
३. फटने वाले –

(३) चुप रहने के चार फायदे लिखो :

१. ____________
२. ____________
३. ____________
४. ____________

(४) कविता की अंतिम चार पंक्तियों का अर्थ लिखो ।

(५) कविता में आए इस अर्थ के शब्द लिखो :

	अर्थ	शब्द
(१)	मधु	---------
(२)	कड़वे	---------
(३)	विचार	---------
(४)	आवश्यकता	---------

भाषा बिंदु

उपसर्ग/प्रत्यय अलग करके मूल शब्द लिखो :

भारतीय, आस्थावान, व्यक्तित्व, स्नेहिल, बेबात, निरादर, प्रत्येक, सुयोग

उपयोजित लेखन

'यातायात की समस्याएँ एवं उपाय' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

हिंदी साप्ताहिक पत्रिकाएँ/समाचार पत्रों से प्रेरक कथाओं का संकलन करो ।

IXX2J5

७. मेरे रजा साहब

– *सुजाता बजाज*

२३ जुलाई सुबह-सुबह ही समाचार मिला, रजा साहब नहीं रहे, और यह सुनते ही मानस पटल पर यादों की एक कतार-सी लग गई ।

पिछले फरवरी की ही बात है । मैं दिल्ली पहुँची थी अपनी 'गणपति प्रदर्शनी' के लिए । सोच रही थी कि रजा साहब शायद अपनी व्हीलचेअर पर मेरी प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर आ जाएँ पर उस रात कुछ अनहोनी-सी हुई । उस रात रजा साहब सपने में आए, मुझे उठाया, हमने बातें की, शो के लिए मुझे उन्होंने शुभकामना दी और कहने लगे, सुजाता एक बार मुझसे मिलने आ जाओ । अब मैं जाने वाला हूँ । इसके बाद तो रुकना मुश्किल था । मैं पहुँच गई उनसे मिलने । वे अस्पताल में शून्य की तरह लेटे हुए थे, मैंने उनके हाथों को छुआ । सिर्फ साँस चल रही थी । अलविदा कहकर लौट आई ।

रजा साहब अपने धर्म के साथ-साथ उतने ही हिंदू और ईसाई भी थे । उनके स्टुडियो में गणपति की मूर्ति, क्रॉस, बाइबल, गीता, कुरान, उनकी माँ का एक फोटो, गांधीजी की आत्मकथा व भारत से लाई हुई मोगरे की कुछ सूखी मालाएँ, सब एक साथ रखा रहता था । वे गणेश को भी पूजते थे और हर रविवार को सुबह चर्च भी जाते थे ।

एक दिन जहाँगीर आर्ट गैलरी में प्रदर्शनी देखते हुए किसी ने कहा, अरे यह तो एस.एच. रजा हैं । मैं एकदम सावधान हो गई क्योंकि मेरी सूची में उनका भी नाम था । मैंने उनके पास जाकर कहा- ''रजा साहब, आपसे बात करनी है !'' वे देखते ही रह गए ! उन्होंने मुझे इंटरव्यू दिया, बहुत सारी बातें हुईं । अचानक मुझसे पूछने लगे कि आप और क्या-क्या करती हैं । मैंने कहा, ''मैं कलाकार हूँ, पेंट करती हूँ ।'' वे तुरंत खड़े हो गए और कहने लगे, ''चलो तुम्हारा काम देखते हैं ।''

मैं सोच में पड़ गई-मेरा काम तो पुणे में है । उन्हें बताया तो वे बोले, ''चलो पुणे ।'' ताज होटल के सामने से हमने टैक्सी ली और सीधे पुणे पहुँचे । उन्होंने मेरा काम देखा और फिर कहा- ''आपको पेरिस आना है । आपका भविष्य बहुत उज्ज्वल है ।''

छोटी-से-छोटी बात भी उनके लिए महत्त्वपूर्ण हुआ करती थी । बड़ी तन्मयता और लगन के साथ करते थे सब कुछ । पेंटिंग बिकने के बाद पैकिंग में भी उनकी रुचि हुआ करती थी । कोई इस काम में मदद करना चाहता तो मना कर देते थे । किसी को हाथ नहीं लगाने देते थे । बड़े करीने से, धैर्य के साथ वे पैकिंग करते । कहते थे- ''लड़की ससुराल

परिचय

जन्म : १९५८, जयपुर (राजस्थान)
परिचय : सुजाता बजाज जी एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं । आजकल आप पेरिस में रहती हैं । आपके चित्र एवं मूर्तिकला भारतीय रंग में डूबी हुई रहती हैं । आपके चित्रों एवं मूर्तियों पर प्राचीन संस्कृति एवं कला की छाप दिखाई पड़ती है । आपने अपनी कला में ऐसी दुनिया का सृजन किया है, जिसमें सादगी भी है और रंगीनी भी, खुशी भी है और गम भी ।
प्रमुख कृतियाँ : सुजाता जी द्‌वारा बनाए गए 'गणेश जी के चित्रों पर आधारित' एक पुस्तक प्रकाशित ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पाठ में प्रसिद्‌ध चित्रकार सैयद हैदर रजा के बारे में लेखिका सुजाता बजाज ने अपने संस्मरण लिखे हैं । यहाँ रजा साहब के सर्वधर्मसमभाव, मानवमात्र से प्रेम, युवा कलाकारों को प्रोत्साहन, उनकी जिज्ञासावृत्ति, कृतियों के प्रति लगाव आदि गुणों को दर्शाया है । इस पाठ में एक सच्चे कलाकार के दर्शन होते हैं ।

मौलिक सृजन

'कला से प्राप्त आनंद अवर्णनीय होता है ।' इसपर अपने मत लिखो ।

जा रही है, उसे सँभालकर भेजना है ।'' जब वे किसी को पत्र लिखते या कुछ और लिखते थे तो मत पूछिए, हर शब्द, हर पंक्ति को नाप-तौलकर लिखते थे । फूल उन्हें बहुत प्यारे लगते थे ।

मुझे याद है २२ अक्तूबर, १९८८ को मैं लंदन से पेरिस के गारदीनो स्टेशन पर ट्रेन से पहुँची थी । रजा साहब स्टेशन पर मेरा इंतजार कर रहे थे । ट्रेन लेट थी पर वे वहीं डटे रहे । मुझे मेरे होस्टल के कमरे में छोड़कर ही वे गए ।

एक दिन मैं बीमार होकर अपने कमरे में पड़ी थी । रात ग्यारह बजे रजा साहब मेरे लिए दवा, भारतीय रेस्टॉरेंट से खाना पैक करवाकर पहुँच गए । मेरे घरवालों को फोन करके कहा-''आप लोग चिंता न करें, मैं हूँ पेरिस में सुजाता की चिंता करने के लिए ।''

हर बार जब मैं या रजा साहब पेंटिंग पूरी करते तो सबसे पहले एक-दूसरे को दिखाते थे । दोनों एक-दूसरे के ईमानदार समालोचक थे । हमने मुंबई, लंदन, पेरिस और न्यूयॉर्क में साथ-साथ प्रदर्शनियाँ कीं पर कभी कोई विवाद नहीं हुआ । यह उनके स्नेह व अपनेपन के कारण ही था ।

हिंदी, उर्दू तो हमेशा से ही बहुत अच्छी रही है उनकी । अंग्रेजी-फ्रेंच भी वे बहुत अच्छी लिखते थे । कविताओं से बहुत प्यार था उन्हें । शेर-गजल व पुराने हिंदी फिल्मी गाने बड़े प्यार से सुनते थे । एक डायरी रखते थे अपने पास । हर सुंदर चीज को लिख लिया करते उसमें। मेरी बेटी हेलेना बहुत खूबसूरत हिंदी बोलती थी तो उन्हें बहुत गर्व होता था । वे हमेशा उसके साथ शुद्ध हिंदी में ही बात करते ।

रजा साहब को अच्छा खाने का बहुत शौक था पर दाल-चावल, रोटी-आलू की सब्जी में जैसे उनकी जान अटकी रहती थी । मैं हफ्ते में एक बार भारतीय शाकाहारी खाना बनाकर भेजती थी उनके लिए, उनके फ्रांसीसी दोस्तों के लिए ।

रजा साहब के कुछ पुराने फ्रांसीसी दोस्तों को उनके जाने की खबर देने गई तो फिर से एक बार उनकी दीवारों पर रजा साहब की काफी सारी कृतियाँ देखने का मौका मिल गया । मैं हमेशा कहती, रजा साहब आप मेरे 'एन्जल गारजियन' हैं तो मुस्कुरा देते पर सन २००० के बाद से कहते, 'क्यों, अब हमारी भूमिका बदल गई है-तुम मेरी एन्जल गार्जियन हो । अब मैं नहीं ।'

— ० —

लेखनीय

हस्तकला प्रदर्शनी में किसी मान्यवर को अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित करने के लिए निमंत्रण पत्र लिखो ।

पठनीय

अंतरजाल से ग्राफिक्स, वर्ड आर्ट, पिक्टोग्राफ संबंधी जानकारी पढ़ो और उनका प्रयोग कहाँ-कहाँ हो सकता है, यह बताओ ।

श्रवणीय

दूरदर्शन पर किसी कलाकार का साक्षात्कार सुनो और कक्षा में सुनाओ ।

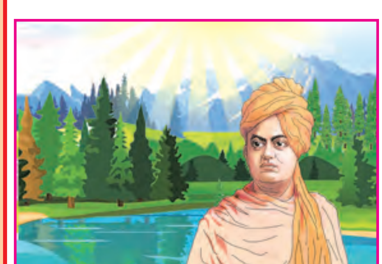

संभाषणीय

किसी प्रसिद्ध चित्र के बारे में अपने मित्रों से चर्चा करो ।

शब्द वाटिका

करीने से = तरीके से, सलीके से
समालोचक = गुण-दोष आदि का प्रतिपादन करने वाला
जिज्ञासा = उत्सुकता
अनहोनी = असंभव, न होने वाली

*** सूचनानुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

रजा साहब की स्वभावगत विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण करो :

दोनों ने मिलकर चित्रों की प्रदर्शनियाँ यहाँ की थीं ।

(३) सूची तैयार करो :

१. पाठ में आए विविध देशों के नाम ।
२. पाठ में उल्लिखित विविध भाषाएँ ।

(४) कृति पूर्ण करो :

खाने की इन चीजों में रजा साहब की जान अटकी रहती

भाषा बिंदु पाठ्‌यपुस्तक से दस वाक्य चुनकर उनमें से उद्‌देश्य और विधेय अलग करके लिखो ।

उपयोजित लेखन 'जहाँ चाह होती है वहाँ राह निकल आती है', इस सुवचन पर आधारित अस्सी शब्दों तक कहानी लिखिए ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन किसी गायक/गायिका की सचित्र जानकारी लिखो ।

IY6XKS

८. पूर्ण विश्राम

– *सत्यकाम विद्‌यालंकार*

डॉक्टर ने बाँह पर काला कपड़ा लपेटा और रबड़ की थैली से हवा फूँककर नाड़ी की गति देखी फिर बोला, ''कुछ सीरियस नहीं है, दफ्तर से छुट्‌टी लेकर बाहर हो आइए; विश्राम आपको पूर्ण निरोग कर देगा। लेकिन, विश्राम भी पूर्ण होना चाहिए'' तो पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई।

घर जाकर श्रीमती जी से कह दिया : ''जुहू की तैयारी कर लो, हम दो दिन पूर्ण विश्राम करेंगे।''

एक दिन बाद पूर्णिमा भी थी। चाँदनी रात का मजा जूहू पर ही है। एक दिन पहले आधी रात से ही उन्होंने तैयारी शुरू कर दी। दो बजे का अलार्म बेल लग गया। स्वयं वह दो से पहले ही उठ बैठी और कुछ नोट करने लगी।

श्रीमती जी ने इन सब कामों की सूची बनाकर मेरे हाथ में दी।

गैरेज में पहुँचकर श्रीमती जी ने मोटर में हवा भरने की पिचकारी, ट्‌यूब वाल, रबड़ सोल्यूशन, एक गैलन इंजिन आयल आदि-आदि चीजें और भी लिखी थीं। दिन भर दौड़-धूप करके पायधुनी से मिस्त्री लाया। सुबह से शाम हो गई मगर शाम तक चार में से दो खिड़कियों की चटखनियाँ भी नहीं कसी गईं। मोटर के लिए जरूरी सामान लाते-लाते रात तक दिल की धड़कन दुगुनी हो गई थी।

रात को सोने लगे तो श्रीमती जी ने आश्वासन देते हुए कहा : ''कल जुहू पर दिन भर विश्राम लेंगे तो थकावट दूर हो जाएगी।''

श्रीमती जी ने अपने करकमलों से घड़ी की घुंडी घुमाकर अलार्म लगा दिया और खुद बाहर जाकर मोटर का पूरा मुआयना करके यह तसल्ली कर ली कि सूची में लिखा सब सामान आ गया या नहीं। सुबह पाँच बजते ही अलार्म ने शोर मचाया।

रोशनी होते न होते जुहू की तैयारी चरम सीमा पर पहुँच गई। स्टोव को भी आज ही धोखा देना था। वह हर मिनट बुझने लगा। आधा घंटा उसमें तेल भरने, धौंकनी करने में चला गया। आखिर चाय का प्रोग्राम स्थगित कर दिया गया और हम दत्तचित्त हो तैयारी में जुट गए। वाटरलू जाने से पहले नेपोलियन ने भी ऐसी तैयारी न की होगी।

ऐसी महत योजनाओं के संपन्न करने में हम पति-पत्नी परस्पर सहयोग भावना से काम करने पर विश्वास रखते हैं। सहयोग भावना

परिचय

जन्म : १९३५, लाहौर (अविभाजित भारत)

परिचय : आप सफल संपादक, लेखक और कवि हैं। सरल-सुबोध भाषा और रोचक बोधगम्य शैली आपके लेखन की विशेषताएँ हैं। लेखन व्यावहारिक है। आपने व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया है।

प्रमुख कृतियाँ : 'स्वतंत्रतापूर्व चरित्र निर्माण', 'मानसिक शक्ति के चमत्कार', 'सफल जीवन' (लेखसंग्रह), 'वीर सावरकर', 'वीर शिवाजी', 'सरदार पटेल', 'महात्मा गांधी' (जीवन चरित्र) आदि।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह समझाने का प्रयास किया है कि जीवन की आपा-धापी में विश्राम के पल मुश्किल से ही मिलते हैं। जब कभी ऐसे अवसर मिलते भी हैं तो घरेलू उलझनों के कारण हम उन पलों का आनंद नहीं उठा पाते।

मौलिक सृजन

पर्यटन स्थलों पर सैर करने के लिए जाते समय बरती जाने वाली सावधानियों की सूची बनाओ ।

श्रवणीय

दूरदर्शन, रेडियो, यू-ट्यूब पर हास्य कविता सुनो और सुनाओ ।

हमारे जीवन का मूलमंत्र है । सहयोग, मन, वचन, कर्म इन तीनों से होता है । जीवन का यह मूलमंत्र, मुझे भूला न था । श्रीमती जी मुझे मेरे कामों की याद दिलाने लगीं और मैं उनके उपकार के बदले उनकी चिंताओं में हाथ बँटाने लगा । मैंने याद दिलाया-''पूड़ियों के साथ मिर्ची का अचार जरूर रख लेना ।''

श्रीमती जी बोली, ''अचार तो रख लूँगी पर तुम भी समाचार पत्र रखना न भूल जाना, मैंने अभी पढ़ा नहीं है ।'' मैं बोला : ''वह तो मैं रख लूँगा ही लेकिन तुम वह गुलबंद न भूल जाना जो हम पिछले साल कश्मीर से लाए थे । जुहू पर बड़ी सर्द हवा चलती है ।''

''गुलबंद तो रख लूँगी लेकिन तुम कहीं बेदिंग सूट रखना न भूल जाना, नहीं तो नहाना धरा रह जाएगा ।''

''और, तुम कहीं रबर कैप भूल गई तो गजब हो जाएगा ।''

''वह तो रख लूँगी लेकिन कुछ नोट पेपर, लिफाफे भी रख लेना । और देखो राइटिंग पैड भी न भूल जाना ।''

''राइटिंग पैड का क्या करोगी ?''

''कई दिन से माँ की चिट्‌ठी आई पड़ी है । जुहू पर खाली बैठे जवाब भी दे दूँगी । यों तो वक्त भी नहीं मिलता ।''

''और जरा वे चिट्‌ठियाँ भी रख लेना, जिनके जवाब देने हैं, चिट्‌ठियाँ ही रह गईं तो जवाब किसके दोगे ?''

''और सुनो, बिजली के बिल और बीमा के नोटिस आ पड़े हैं उनका भी भुगतान करना है, उन्हें भी डाल लेना ।''

''उस दिन तुम धूप का चश्मा भूल गए तो सर का दर्द चढ़ गया इसलिए कहती हूँ छतरी भी रख लेना ।''

''अच्छा बाबा रख लूँगा और देखा, धूप से बचने की क्रीम भी रख लेना । शाम तक छाले न पड़ जाएँ । वहाँ बहुत करारी धूप पड़ती है ।''

श्रीमती जी कहती तो जा रही थीं कि रख लूँगी, रख लूँगी, लेकिन ढूँढ़ रही थीं नेलकटर । कैंची, ब्रश और सब तो मिल गया था लेकिन नेलकटर नहीं मिल रहा था इसलिए बहुत घबराई हुई थीं ।

मैंने कहा: ''जाने दो नेलकटर, बाकी सब चीजें तो रख लो ।''

इधर मैं अपने लिए नया अखबार और कुछ ऐसी किताबें थैले में भर रहा था जो बहुत दिनों से समालोचना के लिए आई थीं और सोचता था कि फुरसत से समालोचना कर दूँगा । आखिर तीन किताबें थैले में झोंक लीं । कई दिनों से कविता करने की भी धुन सवार हुई थी । उनकी कई कतरनें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं । उन्हें भी जमा किया । सोचा, काव्य प्रेरणा के लिए जुहू से अच्छी जगह और कौन-सी मिलेगी ?

आखिर कई अटैची, कई थैले, कई झोले भरकर हम जुहू पहुँचे ।

पाँच-सात मिनट तो हम स्वप्नलोक में विचरते रहे ।

हम समुद्र में नहाने को चल पड़े । समुद्र तट पर और लोग भी नहा रहे थे । एक ऊँची लहर ने आकर हम दोनों को ढँक लिया । लहर की उस थपेड़ से न जाने श्रीमती जी के मस्तिष्क में क्या नई स्फूर्ति आ गई कि उन्होंने मुझसे पूछा : ''तुम्हें याद है बरामदे की खिड़की को तुमने अंदर से बंद कर दिया था या नहीं ?''

मैं कह उठा, ''मुझे तो कुछ याद नहीं पड़ता ।''

''अगर वह बंद नहीं हुई और खुली ही रह गई तो क्या होगा ?'' कहते-कहते श्रीमती जी के चेहरे का रंग पीला पड़ गया ।

मैंने कहा ''चलो छोड़ो अब इन चिंताओं को, जो होना होगा हो जाएगा ।''मेरी बात से तो उनकी आँखों में आँसुओं का समुद्र ही बह पड़ा । उनके काँपते ओठों पर यही शब्द थे ''अब क्या होगा ?''

''और अगर खिड़कियाँ खुली रह गई होंगी तो घर का क्या होगा ?'' यह सोच उनकी अधीरता और भी ज्यादा होती जा रही थी । जिस धड़कन का इलाज करने को जुहू पर आया था वह दस गुना बढ़ गई थी । मैंने तेजी से मोटर चलाई । मोटर का इंजिन धक-धक कर रहा था लेकिन मेरा दिल उससे भी ज्यादा तेज रफ्तार से धड़क रहा था । जिस रफ्तार से हम गए थे, दूनी रफ्तार से वापस आए । अंदर आकर देखा कि खिड़की की चटखनी बदस्तूर लगी थी, सब ठीक-ठाक था । मैंने ही वह लगाई थी, लेकिन लगाकर यह भूल गया था कि लगाई या नहीं और इसका नतीजा यह हुआ कि पहले तो मेरे ही दिल की धड़कन बढ़ी थी, अब श्रीमती जी के दिल की धड़कन भी बढ़ गई । मुझे याद आ रहे थे 'पूर्ण विश्राम' और 'पूर्ण निरोग', साथ ही यह विश्वास भी पक्का हो गया था कि जिस शब्द के साथ 'पूर्ण' लग जाता है, वह 'पूर्ण भयावह' हो जाता है ।

—०—

पठनीय

प्रेमचंद की कोई कहानी पढ़ो और उसका आशय, अपने शब्दों में व्यक्त करो ।

लेखनीय

'सड़क सुरक्षा सप्ताह' के अवसर पर यातायात के नियमों के बैनर्स बनाकर विद्यालय की दीवारों पर लगाओ ।

संभाषणीय

किसी दुकानदार और ग्राहक के बीच का संवाद प्रस्तुत करो ।

शब्द वाटिका

धौंकनी करना = हवा भरना
झल्लाना = बहुत बिगड़ जाना, झुंझलाना

मुहावरे

आँखों से ओझल होना = गायब हो जाना
हाथ बँटाना = सहायता करना
चेहरे का रंग पीला पड़ना = घबरा जाना
धुन सवार होना = लगन होना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) संजाल पूर्ण करो :

गैरेज की सूची में लिखी हुई चीजें

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

जुहू जाते वक्त साथ में ली गई वस्तुएँ

(३) लिखो :

पर्यायवाची शब्द :

ऐनक	रात	अखबार	घर
..........,........	..........,........,........	..........,........	..........,........,........

भाषा बिंदु निम्नलिखित समोच्चारित भिन्नार्थक हिंदी शब्दों के अर्थ लिखो तथा उन शब्दों का अलग-अलग पूर्ण वाक्यों में प्रयोग करो : हार, वार, हल, सीना, ज्वार, सुमन

उपयोजित लेखन कोई साप्ताहिक पत्रिका अनियमित रूप में प्राप्त होने के विरोध में शिकायत करते हुए संपादक को निम्न प्रारूप में पत्र लिखो :

पत्र का प्रारूप

(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय :..............
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन ....

भवदीय/भवदीया,
....
नाम : ....
पता : ....
....
ई-मेल आईडी : ....

IYFTHF

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन प्राचीन काल से आज तक प्रचलित संदेश वहन के साधनों की सचित्र सूची तैयार करो ।

९. अनमोल वाणी

– संत कबीर

– भक्त सूरदास

जैसा भोजन खाइए, तैसा ही मन होय ।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी होय ।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करै, आपौ शीतल होय ।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय ।

(संत कबीर)

× ×   × ×

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी ।।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी ।
काँचौ दूध पियावत पचि-पचि देत न माखन-रोटी ।
सूर स्याम चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी ।।

(भक्त सूरदास)

—o—

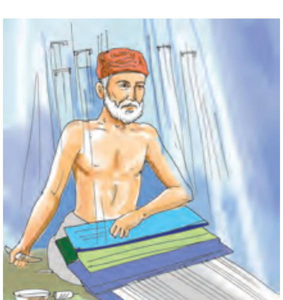

परिचय

संत कबीर

जन्म : लगभग १३९८ (उ.प्र.)
मृत्यु : लगभग १५१८ (उ.प्र.)
परिचय : भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के संत कवि कबीर मानवता एवं समता के प्रबल समर्थक थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'साखी', 'सबद, 'रमैनी' इन तीनों का संग्रह 'बीजक' नामक ग्रंथ में किया गया है ।

भक्त सूरदास

जन्म : लगभग १४७८, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : १५६३ से १५९१ के बीच
परिचय : सूरदास जी वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते हैं । आपका नाम कृष्णभक्ति धारा को प्रवाहित करने वाले कवियों में सर्वोपरि है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'सूरसागर', 'सूरसारावली', 'साहित्यलहरी', 'नल-दमयंती' आदि ।

पद्य संबंधी

यहाँ संत कबीरदास ने अपने दोहों में मनुष्य को सद्‌गुणों को अपनाकर आगे बढ़ने को कहा है ।

भक्त सूरदास रचित यह पद 'सूरसागर' महाकाव्य से लिया गया हैं । इसमें श्रीकृष्ण की बालसुलभ लीलाओं का वर्णन किया है ।

शब्द वाटिका

कबहिं = कब
चोटी = चुटिया, बेणी
अजहूँ = अब तक
काँचौ = कच्चा
पचि-पचि = बार-बार
चिरजीवौ = लंबी आयु
दोउ = दोनों
हलधर = बलराम

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) कृति पूर्ण करो :

ऐसी वाणी बोलनी है जिससे
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) कविता में इस अर्थ में आए शब्द लिखो :

१. ठंडा - ....
२. कोई - ....
३. बलराम - ....
४. मक्खन - ....

(३) कृति पूर्ण करो :

श्रीकृष्ण द्‌वारा चोटी के संदर्भ में की गई बातें
↓
[ ]
↓
[ ]

(४) 'भोजन का प्रभाव'- टिप्पणी लिखो ।

कल्पना पल्लवन पानी, वाणी, दूध इन शब्दों का उपयोग करते हुए कोई कविता लिखो ।

भाषा बिंदु पाठों में आए अलग-अलग काल के वाक्य ढूँढ़कर उनका अन्य कालों में परिवर्तन करो ।

उपयोजित लेखन 'आगे कुआँ पीछे खाई' कहावत का अर्थ लिखकर उससे संबंधित कोई प्रसंग लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन 'हाफ मैराथन' में सफलता प्राप्त करने के लिए कौन-कौन-सी तैयारियाँ करोगे, लिखो ।

IYPPP3

१.धरती का आँगन महके

- डॉ. प्रकाश दीक्षित

धरती का आँगन महके कर्मज्ञान-विज्ञान से,
ऐसी सरिता करो प्रवाहित खिले खेत सब धान से ।

अभिलाषाएँ नित मुसकाएँ आशाओं की छाँह में,
पैरों की गति बँधी हुई हो विश्वासों की राह में ।

शिल्पकला-कुमुदों की माला वक्षस्थल का हार हो,
फूल-फलों से हरी-भरी इस धरती का शृंगार हो ।

चंद्रलोक या मंगल ग्रह पर चढ़ें किसी भी यान से,
किंतु न हो संबंध विनाशक अस्त्रों का इनसान से ।

साँस-साँस जीवनपट बुनकर प्राणों का तन ढाँकती,
सदाचार की शुभ्र शलाका मन सुंदरता आँकती ।

प्रतिभा का पैमाना मेधा की ऊँचाई नापता,
मानवता का मीटर बन, मन की गहराई मापता ।

आत्मा को आवृत्त कर दें स्नेह प्रभा परिधान से,
करें अर्चना हम सब मिलकर वसुधा के जयगान से ।

— ० —

परिचय

जन्म : १९२९, इटावा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०१२
परिचय : आजीवन अध्यापक रहे डॉ. दीक्षित जी 'अर्चना', 'मणिप्रभा', 'ज्ञानार्जन' आदि पत्रिकाओं के संपादक रहें । 'अमर उजाला' समाचार पत्र में पत्रकारिता भी की । आपकी रचनाएँ विविध पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाती रहीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अर्चनांजलि', 'मंगलपथ', 'दोहावली', 'राष्ट्रीय स्वर' (कविता संग्रह) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत नई कविता में कविवर डॉ. दीक्षित जी ने कर्म, ज्ञान एवं विज्ञान की महत्ता स्थापित की है । आपका कहना है कि हम ज्ञान-विज्ञान के बल पर भले ही आसमान को नाप लें परंतु विनाशक शस्त्रास्त्र से मानवता को बचाना भी आवश्यक है । यह तभी संभव होगा जब समाज में सदाचार, स्नेह बढ़ेगा ।

कल्पना पल्लवन

'विश्व शांति की माँग सर्वाधिक प्रासंगिक है', इस तथ्य पर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

शलाका = सलाई
आँकना = अंदाजा लगाना, मूल्य बताना
पैमाना = नाप-तौल, मापदंड
मेधा = बुद्धि
आवृत्त = ढँका, लौटाया हुआ
वसुधा = धरती, अवनि, धरा

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

कवि की अपेक्षाएँ

(२) कृति पूर्ण करो :

धरती का आँगन इनसे महके

धरती का शृंगार इनसे होगा

(३) उत्तर लिखो :

१. मेधा की ऊँचाई नापेगा -
२. हम सब मिलकर करें -

(४) कृति करो :

मानव अंतरिक्ष यान से यहाँ पहुँचा है ।

भाषा बिंदु

(अ) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो तथा उनका वाक्यों में प्रयोग करो :
शरीर, मनुष्य, पृथ्वी, छाती, पथ

(आ) पाठों में आए सभी प्रकार के सर्वनाम ढूँढ़कर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

'छाते की आत्मकथा' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

प्राचीन भारतीय शिल्पकला संबंधी सचित्र जानकारी संकलित करो, विशेष कलाकृतियों की सूची बनाओ ।

IYYKQQ

२. दो लघुकथाएँ

– *हरि जोशी*

नींव

बहुमंजिला इमारत की दीवार नींव से उठ रही थी । ठेकेदार नया था । भयभीत-सा वह एक तगारी सीमेंट और पाँच तगारी रेत के मसाले से ईंटों की जुड़ाई करवा रहा था । अगले दिन अधिकारी महोदय आए । उन्होंने काम के प्रति घोर असंतोष व्यक्त किया । महोदय बोले-''ऐसा काम करना हो तो कहीं और जाइए ।''

अगले दिन सशंकित नये ठेकेदार ने एक तगारी सीमेंट और तीन तगारी रेत के मसाले से ईंटों की जुड़ाई की । संबंधित अधिकारी आए । उन्होंने नींव की दीवार पर एक निगाह डाली और गरम हो गए । इस बार ठेकेदार को अंतिम चेतावनी दी, 'यदि कल तक काम में पर्याप्त सुधार नहीं किया गया तो काम बंद करवा दिया जाएगा ।'

जब नये ठेकेदार की समझ में बात नहीं आई तो उसने एक अनुभवी ठेकेदार से इस समस्या पर उसकी सलाह चाही । अनुभवी ठेकेदार ने बताया कि ये महोदय रिश्वत चाहते हैं । इसीलिए काम में कमी बता रहे हैं । नया ठेकेदार ईमानदार था । वह रिश्वत देने-लेने को अपराध समझता था । उसने भ्रष्ट अधिकारी को पाठ पढ़ाने का निश्चय कर लिया ।

अगले दिन अधिकारी महोदय निरीक्षण करने आए । ठेकेदार ने उन्हें रुपयों से भरा लिफाफा पकड़ा दिया । अधिकारी प्रसन्न होकर जैसे ही जाने लगे वैसे ही एकाएक वहाँ उच्च अधिकारी आ गए । अधिकारी महोदय रिश्वत लेते हुए रँगे हाथों पकड़े गए ।

वस्तुतः रात में ही ईमानदार ठेकेदार ने अधिकारी महोदय के खिलाफ उच्च अधिकारी के पास शिकायत कर दी थी । उच्च अधिकारी ईमानदार थे । उन्होंने कहा-''कुछ एक भ्रष्ट अधिकारियों के कारण ही पूरा प्रशासन बदनाम होता है ।'' उन्होंने भ्रष्ट अधिकारी को दंड दिलवाने का निर्णय ले लिया । सच ही कहा है- 'बुरे काम का बुरा नतीजा ।' ठेकेदार और उच्च अधिकारी की ईमानदारी का समाचार चारों तरफ फैल गया । उनका सार्वजनिक समारोह में सम्मान किया गया ।

— ० —

परिचय

जन्म : १९४३, खूड़िया (म.प्र.)
परिचय : सेवानिवृत्त प्राध्यापक हरि जोशी जी की साहित्यिक रचनाएँ हिंदी की लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । आपको 'गोयनका सारस्वत सम्मान', 'वागीश्वरी सम्मान' प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पंखुरिया', 'यंत्रयुग', 'अखाड़ों का देश', 'भारत का राग-अमेरिका के रंग' आदि ।

गद्य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में जोशी जी ने बताया है कि हमें बुरे काम का फल बुरा ही मिलेगा अतः बुरे काम नहीं करने चाहिए ।

दूसरी लघुकथा में आपने समझाया है कि कठोरता की अपेक्षा विनम्रता अधिक महत्त्वपूर्ण है । 'घमंडी' का सिर हमेशा नीचा होता है। अतः हमें घमंड नहीं करना चाहिए।

मौलिक सृजन

'विनम्रता सारे सद्‌गुणों की नींव है' विषय पर अपने मन के भाव लिखो ।

संभाषणीय

'इंद्रधनुष के सात रंग, रहें हमेशा संग-संग' इस कथन के आधार पर कहानी बनाकर अपने सहपाठियों के सामने प्रस्तुत करो ।

श्रवणीय

किसी समारोह का वर्णन उचित विराम, बलाघात, तान-अनुतान के साथ 'एकाग्रता' से सुनो और यथावत सुनाओ ।

पठनीय

श्रमनिष्ठा का महत्त्व बताने वाला कोई निबंध पढ़ो ।

लेखनीय

किसी समारोह के मुख्य बिंदुओं, एवं मुद्‌दों को पढ़ो । इनका पुनः स्मरण करके लिखो ।

जीभ का वर्चस्व

पंक्तिबद्‌ध और एकजुट रहने के कारण दाँत बहुत दुस्साहसी हो गए थे । एक दिन वे गर्व में चूर होकर जिह्‌वा से बोले, ''हम बत्तीस घनिष्ठ मित्र हैं, एक-से-एक मजबूत । तू ठहरी अकेली, चाहें तो तुझे बाहर ही न निकलने दें ।'' जिह्‌वा ने पहली बार ऐसा कलुषित विचार सुना था । वह हँसकर बोली, ''ऊपर से एकदम सफेद और स्वच्छ हो पर मन से बड़े कपटी हो ।''

''ऊपर से स्वच्छ और अंदर से काले घोषित करने वाली जीभ ! वाचालता छोड़, अपनी औकात में रह । हम तुझे चबा सकते हैं । यह मत भूल कि तू हमारी कृपा पर ही राज कर रही है'', दाँतों ने किटकिटाकर कहा । जीभ ने नम्रता बनाए रखी किंतु उत्तर दिया, ''दूसरों को चबा जाने की ललक रखने वाले बहुत जल्दी टूटते भी हैं । सामनेवाले तो और जल्दी गिर जाते हैं । तुम लोग अवसरवादी हो, मनुष्य का साथ तभी तक देते हो, जब तक वह जवान रहता है । वृद्‌धावस्था में उसे असहाय छोड़कर चल देते हो ।''

शक्तिशाली दाँत भी आखिर अपनी हार क्यों मानने लगे ? बोले, ''हमारी जड़ें बहुत गहरी हैं । हमारे कड़े और नुकीलेपन के कारण बड़े-बड़े हमसे थर्राते हैं ।''

जिह्‌वा ने विवेकपूर्ण उत्तर दिया, ''तुम्हारे नुकीले या कड़ेपन का कार्यक्षेत्र मुँह के भीतर तक सीमित है । विनम्रता से कहती हूँ कि मुझमें पूरी दुनिया को प्रभावित करने और झुकाने की क्षमता है ।''

दाँतों ने पुनः धमकी दी, ''हम सब मिलकर तुझे घेरे खड़े हैं । कब तक हमसे बचेगी ?'' जीभ ने दाँतों के घमंड को चूर करते हुए चेतावनी दी, ''डॉक्टर को बुलाऊँ ? दंत चिकित्सक एक-एक को बाहर कर देगा । मुझे तो छुएगा भी नहीं और तुम सब बाहर दिखाई दोगे ।''

घमंडी दाँत अब निरुत्तर थे । उन्हें कविता की यह पंक्ति याद आ गई, 'किसी को पसंद नहीं सख्ती बयान में, तभी तो दी नहीं हड्‌डी जबान में ।' घमंडी दाँतों ने आखिर जीभ का लोहा मान लिया ।

— ० —

शब्द वाटिका

तगारी = बड़ा तसला, घमेला
कलुषित = अपवित्र, दूषित
ललक = लालसा, तीव्र इच्छा
अवसरवादी = स्वार्थी, मतलबी
बयान = चर्चा, आवाज, कथन

मुहावरा

लोहा मानना = श्रेष्ठता को स्वीकर करना
रँगे हाथ पकड़ना = अपराध करते हुए प्रत्यक्ष पकड़ना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

दाँतों की विशेषताएँ

(२) उत्तर लिखो :

१. जीभ द्वारा दी गई चेतावनी

२. पंक्तिबद्ध और एकजुट रहने के कारण दाँतों में आया गलत परिवर्तन

(३) विधानों के सामने चौखट में सही ☑ अथवा गलत ☒ चिह्न लगाओ :

१. जिह्वा ने अविवेक पूर्ण उत्तर दिया । ☐
२. दाँत घमंडी थे । ☐
३. सभी अपराधियों को नियमानुसार सजा नहीं हुई । ☐
४. ठेकेदार पुराना था । ☐

(४) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. बहुमंजिला		१. ईमानदार
२. अधिकारी		२. इमारत
३. नया ठेकेदार		३. भ्रष्ट
४. सार्वजनिक समारोह		४. अनुभवी
		५. सम्मान

भाषा बिंदु निम्नलिखित शब्दों के आधार पर मुहावरे लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

ईंट — जान — पानी — खिचड़ी

उपयोजित लेखन 'जल के अपव्यय की रोकथाम' संबंधी चित्रकला प्रदर्शनी का आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन किसी ग्रामीण और शहरी व्यक्ति की दिनचर्या की तुलनात्मक जानकारी प्राप्त करके आपस में चर्चा करो ।

IZ8GSD

३. लकड़हारा और वन

– अरविंद भटनागर

परिचय

परिचय : अरविंद भटनागर जी एकांकीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं । पर्यावरण परिरक्षण के लिए वृक्षारोपण एवं वृक्ष संवर्धन की आवश्यकता पर हमेशा आपने बल दिया है ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने मेहनत, ईमानदारी एवं छोटे परिवार का महत्त्व समझाया है । आपका कहना है कि पेड़-पौधों से हवा, पानी, फल मिलते हैं । अतः हमें पेड़-पौधों, वनों का संरक्षण करना चाहिए ।

मौलिक सृजन

'प्रकृति हमारी गुरु' विषय पर अपने विचार लिखो ।

पात्र

१. लकड़हारा २. एक ग्रामीण व्यक्ति के रूप में भगवान ३. लकड़हारे की पत्नी ४. एक हरा-भरा पेड़ ।

पहला दृश्य

(एक लकड़हारा टहलता हुआ मंच पर आता है । लकड़हारे के हाथ में कुल्हाड़ी है । वह पेड़ के पास आकर रुक जाता है।)

लकड़हारा : **(पेड़ को देखकर)** चलो, आज इसी पेड़ को काटें । इससे आज की रोटी का इंतजाम हो जाएगा । **(पेड़ की डाल काटने के लिए कुल्हाड़ी चलाता है पर कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर नदी में गिर जाती है ।)**

लकड़हारा : **(चिंतित एवं दुखी स्वर में)** हे भगवान ! मेरी कुल्हाड़ी... पानी गहरा है, तैरना आता नहीं । कैसे काटूँगा, क्या बेचूँगा ? आज बच्चे क्या खाएँगे ? **(इसी बीच भगवान ग्रामीण व्यक्ति का वेश धारण कर मंच पर आते हैं ।)**

ग्रामीण : बड़े दुखी लग रहे हो । क्या हुआ ?

लकड़हारा : **(दुख भरे शब्दों में)** क्या कहूँ भाई, अचानक मेरी कुल्हाड़ी नदी के गहरे पानी में गिर पड़ी । मेरा तो सब कुछ चला गया ।

ग्रामीण : हाँ भाई, तुम्हारा कहना तो ठीक है ।

लकड़हारा : भाई, तुम मेरी मदद कर सको तो बड़ा उपकार होगा ।

ग्रामीण : ठीक है... तुम दुखी मत होओ । मैं कोशिश करता हूँ । **(यह कहकर ग्रामीण नदी में कूदा और एक चाँदी की कुल्हाड़ी निकालकर बाहर आया ।)** अरे भाई, तुम कितने भाग्यवान हो । लो, तुम्हारी चाँदी की कुल्हाड़ी ।

लकड़हारा : नहीं भाई, यह कुल्हाड़ी मेरी नहीं है ।

ग्रामीण : ठीक है । एक बार फिर कोशिश करता हूँ । **(नदी में फिर कूदता है और सोने की कुल्हाड़ी निकालकर बाहर आता है ।)**

लकड़हारा : **(आश्चर्य से)** क्या कुल्हाड़ी मिल गई भाई !

ग्रामीण : हाँ, मिल गई । लो यह सोने की कुल्हाड़ी ।

लकड़हारा : नहीं भाई, मैं तो बहुत गरीब हूँ । यह सोने की कुल्हाड़ी तो

मेरी है ही नहीं । **(दुखी होकर)** खैर, जाने दो भाई, तुमने मेरे लिए बहुत कष्ट उठाए ।

ग्रामीण : **(बीच में ही)** नहीं भाई नहीं । इसमें कष्ट की क्या बात है । मुसीबत के समय एक दूसरे के काम आना तो हमारा धर्म है । मैं एक बार फिर कोशिश करता हूँ । **(ग्रामीण नदी में कूदकर लोहे की कुल्हाड़ी निकालता है ।)**

ग्रामीण : लो भाई, इस बार तो यह लोहा ही हाथ लगा है ।

लकड़हारा : **(अपनी लोहे की कुल्हाड़ी देखकर खुश हो उठता है ।)** तुम्हारा यह उपकार मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा । भगवान तुम्हें सुखी रखें ।

ग्रामीण : एक बात मेरी समझ में नहीं आई ।

लकड़हारा : **(हाथ जोड़कर)** वह क्या ?

ग्रामीण : मैंने तुम्हें पहले चाँदी की कुल्हाड़ी दी, फिर सोने की दी, तुमने नहीं ली । ऐसा क्यों ?

लकड़हारा : दूसरे की चीज को अपनी कहना ठीक नहीं है । मेहनत और ईमानदारी से मुझे जो भी मिलता है, वही मेरा धन है । **(ग्रामीण चला जाता है और भगवान के रूप में मंच पर फिर से आता है ।)**

भगवान : धन्य हो भाई, मैं तुम्हारी ईमानदारी से बहुत प्रसन्न हूँ लेकिन एक शर्त पर । तुम हरे-भरे पेड़ों को नहीं काटोगे, न ही लालच में पड़कर जरूरत से अधिक सूखी लकड़ी काटोगे ।

लकड़हारा : मुझे शर्त मंजूर है । (परदा गिरता है ।)

दूसरा दृश्य

(मंच पर लकड़हारा सो रहा है । मंच के पीछे से उसकी पत्नी आवाज देती है ।)

पत्नी : अरे, रामू के बापू, घोड़े बेचकर सो रहे हो । क्या आज लकड़ी काटने नहीं जाना है ?

लकड़हारा : जाता हूँ भागवान । **(अपनी कुल्हाड़ी उठाकर जंगल की तरफ जाता है । मन-ही-मन सोचता है ।)** जिधर देखो, दूर तक जंगल का पता नहीं । जो थे, वे कटते जा रहे हैं और उनकी जगह खड़े हो रहे हैं सीमेंट के जंगल । **(अचानक उसे चोट लगती है, वह चीख उठता है, फिर एक पेड़ की छाँव में बैठ जाता है ।)** अहा ! कितनी ठंडी छाया है । सारी थकान दूर हो गई। **(हरे-भरे पेड़ के नीचे से**

श्रवणीय

विभिन्न अवसरों पर शाला में खेले जाने वाले नाटकों के संवाद ध्यान देते हुए सुनो ।

संभाषणीय

किसी भारतीय लोककथा की विशेषताओं के बारे में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करो ।

पठनीय

विभिन्न विधाओं से प्राप्त सूचनाओं, सर्वेक्षणों, टिप्पणियों को पढ़कर उनका संकलन करो ।

लेखनीय

किसी लिखित सामग्री के उद्देश्य और उसके दृष्टिकोण के मुद्दों को समझकर उसे प्रभावपूर्ण शब्दों में लिखो ।

उठकर अपनी कुल्हाड़ी सँभालता है ।) चलो यही सही, इसे ही साफ करें । **(कुल्हाड़ी चलाने की मुद्रा में हाथ उठाता है ।)**

पेड़ : अरे ! अरे ! यह क्या कर रहे हो ?

लकड़हारा : **(चौंककर)** कौन ? **(आस-पास नजर दौड़ाता है ।)**

पेड़ : अरे भाई, यह तो मैं हूँ ।

लकड़हारा : **(डरकर)** कौन... भू ... त !

पेड़ : डरो नहीं भाई, मैं तो पेड़ हूँ... पेड़ ।

लकड़हारा : **(आश्चर्य से)** पेड़ ! क्या तुम बोल भी सकते हो ।

पेड़ : भाई, मुझमें भी प्राण हैं । तुम मुझ बेकसूर पर क्यों वार कर रहे हो ?

लकड़हारा : तो क्या करूँ ? चार-चार बच्चों को पालना पड़ता है । यही एक रास्ता है रोजी-रोटी का ।

पेड़ : अरे भाई, अधिक बच्चे होने के कारण परिवार में दुख तो आएगा ही, पर तुम कितने बदल गए हो ! तुम यह भी भूल गए कि मैं ही तुम्हें जीने के लिए शुद्‌ध हवा, पानी और भोजन, सभी कुछ देता हूँ ।

लकड़हारा : यह तो तुम्हारा काम है । इसमें उपकार की क्या बात है ।

पेड़ : मैंने कब कहा उपकार है भाई । पर यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि बिना हवा के मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता । उसे साँस लेने के लिए शुद्‌ध हवा तो चाहिए ही और हवा को शुद्‌ध करने का काम मैं ही करता हूँ ।

लकड़हारा : ठीक है पर मेरे सामने भी तो समस्या है ।

पेड़ : यदि तुम हमें काटते रहे, तो ये बेचारे वन्य पशु कहाँ जाएँगे ? क्या तुम अपने स्वार्थ के लिए उनका घर उजाड़ दोगे ?

लकड़हारा : तो फिर क्या मैं अपना घर उजाड़ दूँ ?

पेड़ : मेरा मतलब यह नहीं है । यदि तुम इसी तरह हमें काटते रहे, तो अच्छी वर्षा कैसे आएगी और एक दिन...

लकड़हारा : तुम्हारी बात तो ठीक है पर अब तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ ?

पेड़ : कम-से-कम अपने हाथों अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी तो मत मारो । कभी हरा-भरा पेड़ मत काटो । उन्हें अपने बच्चों के समान पालो, ताकि चारों ओर हरियाली छाई रहे ! (लकड़हारा हामी भरता है । उसी समय परदा गिरता है ।)

—०—

शब्द वाटिका

शर्त = बाजी

बलि = आहुति, भेंट, चढ़ावा

मुहावरे

हामी भरना = स्वीकार करना

घोड़े बेचकर सोना = निश्चिंत होकर सोना

अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना = खुद अपना नुकसान करना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

कुल्हाड़ी पानी में गिरने के कारण खड़ी हुई समस्याएँ

(२) संक्षेप में उत्तर लिखो :

१. पेड़ द्वारा दिया गया संदेश –

२. भगवान की शर्त –

३. पेड़ों के उपयोग –

४. पेड़ों की कटाई के दुष्परिणाम –

IZHCU1

(३) कृति पूर्ण करो :

पाठ में प्रयुक्त धातुओं के नाम

भाषा बिंदु

(१) निम्न वृत्त में दिए संज्ञा तथा विशेषण शब्दों को छाँटकर तालिका में उचित स्थानों पर उनके भेद सहित लिखो :

नदी, पहाड़ी, सीता, वह लकड़हारा, पानी, चार किलो, गरीबी, ईमानदारी, गंगा, पालक, दस, चाँदी कोई, सभा, धनी

संज्ञा	भेद	विशेषण	भेद
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------

(२) पाठ में प्रयुक्त कारक विभक्तियाँ ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन किसी मराठी निमंत्रण पत्रिका का रोमन (अंग्रेजी) में लिप्यंतरण करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन किसानों के सामने आने वाली समस्याओं की जानकारी प्राप्त करके उन समस्याओं को दूर करने हेतु चर्चा करो ।

४. सौहार्द-सौमनस्य

- जहीर कुरैशी

परिचय

जन्म : १९५०, गुना (म.प्र.)
परिचय : आपकी रचनाएँ, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। आपको 'इनकार्पोरेटेड सम्मान', 'गोपाल सिंह नेपाली सम्मान' प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक टुकड़ा धूप', 'लेखनी के स्वप्न', 'चाँदनी का दुख', 'भीड़ में सबसे अलग', 'पेड़ तनकर भी नहीं टूटा' (गजल संग्रह) आदि ।

पद्‍य संबंधी

प्रस्तुत दोहों में जहीर कुरैशी जी ने छोटे-बड़े के भेद मिटाने, नफरत, स्वार्थ आदि छोड़ने के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि अनेकता में एकता ही अपने देश की शान है । अतः हमें मिल-जुलकर रहना चाहिए ।

कल्पना पल्लवन

'भारत की विविधता में एकता है', इसे स्पष्ट करो ।

वो छोटा, मैं हूँ बड़ा, ये बातें निर्मूल,
उड़कर सिर पर बैठती, निज पैरों की धूल ।

नफरत ठंडी आग है, इसमें जलना छोड़,
टूटे दिल को प्यार से, जोड़ सके तो जोड़ ।

पौधे ने बाँटे नहीं, नाम पूछकर फूल,
हमने ही खोले बहुत, स्वारथ के इस्कूल ।

धर्म अलग, भाषा अलग, फिर भी हम सब एक,
विविध रंग करते नहीं, हमको कभी अनेक ।

जो भी करता प्यार वो, पा लेता है प्यार,
प्यार नकद का काम है, रहता नहीं उधार ।

जर्रे-जर्रे में खुदा, कण-कण में भगवान,
लेकिन 'जर्रे' को कभी, अलग न 'कण' से मान ।

इसीलिए हम प्यार की, करते साज-सम्हार,
नफरत से नफरत बढ़े, बढ़े प्यार से प्यार ।

भाँति-भाँति के फूल हैं, फल बगिया की शान,
फल बगिया लगती रही, मुझको हिंदुस्तान ।

हम सब जिसके नाम पर, लड़ते हैं हर बार,
उसने सपने में कहा, लड़ना है बेकार !

कितना अच्छा हो अगर, जलें दीप से दीप,
ये संभव तब हो सके, आएँ दीप समीप ।।

—०—

शब्द वाटिका

निर्मूल = बिना जड़ की, निरर्थक
स्वारथ = स्वार्थ
सम्हार = सँभाल, सुरक्षित
जर्रा = अत्यंत छोटा कण

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :**

(१) कृति पूर्ण करो :

१. इन बातों में अलग होकर भी हम सब एक हैं –

[ ] [ ]

२. बगिया की शान –

[ ] [ ]

(२) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखो :

१. दीपक = -----------
२. पुष्प = -----------
३. तिरस्कार = -----------
४. प्रेम = -----------

(३) कविता में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ियाँ लिखो ।

भाषा बिंदु पाठों में आए अव्ययों को पहचानो और उनके भेद बताकर उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन **शालेय बैंड पथक के लिए आवश्यक सामग्री खरीदने हेतु अपने विद्यालय के प्राचार्य से विद्‍यार्थी प्रतिनिधि के नाते अनुमति माँगते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखो :**

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय : ....
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन
....
....
....
....।

आपका/आपकी आज्ञाकारी,
....
(विद्‍यार्थी प्रतिनिधि)
कक्षा : ....

IZR8VN

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन 'नफरत से नफरत बढ़ती है और स्नेह से स्नेह बढ़ता है', इस तथ्य से संबंधित अपने विचार लिखो ।

५. खेती से आई तब्दीलियाँ

– पं. जवाहरलाल नेहरू

प्रिय बेटी इंदिरा,

अपने पिछले खत में मैंने कामों के अलग-अलग किए जाने का कुछ हल बतलाया था । बिलकुल शुरू में जब आदमी सिर्फ शिकार पर गुजर-बसर करता था, काम बँटे हुए न थे । हरेक आदमी शिकार करता था और मुश्किल से खाने भर को पाता था । सबसे पहले मर्दों और औरतों के बीच में काम बँटना शुरू हुआ होगा; मर्द शिकार करता होगा और औरत घर में रहकर बच्चों और पालतू जानवरों की निगरानी करती होगी ।

जब आदमियों ने खेती करना सीखा तो बहुत-सी नई-नई बातें निकलीं । पहली बात यह हुई कि काम कई हिस्सों में बँट गए । कुछ लोग शिकार खेलते और कुछ खेती करते और हल चलाते । ज्यों-ज्यों दिन गुजरते गए आदमियों ने नये-नये पेशे सीखे और उनमें पक्के हो गए ।

खेती करने का दूसरा अच्छा नतीजा यह हुआ कि गाँव और कस्बे बने। लोग इनमें आबाद होने लगे । खेती के पहले लोग इधर-उधर घूमते-फिरते थे और शिकार करते थे । उनके लिए एक जगह रहना जरूरी नहीं था। शिकार हरेक जगह मिल जाता था। इसके सिवा उन्हें गायों, बकरियों और अपने दूसरे जानवरों की वजह से इधर-उधर घूमना पड़ता था। इन जानवरों के चराने के लिए चरागाहों की जरूरत थी । एक जगह कुछ दिनों तक चरने के बाद जमीन में जानवरों के लिए काफी घास पैदा नहीं होती थी और सारी जाति को दूसरी जगह जाना पड़ता था ।

जब लोगों को खेती करना आ गया तो उनका जमीन के पास रहना जरूरी हो गया। जमीन को जोत-बोकर वे छोड़ नहीं सकते थे। उन्हें साल भर तक लगातार खेती का काम लगा ही रहता था और इस तरह गाँव और शहर बन गए ।

दूसरी बड़ी बात जो खेती से पैदा हुई वह यह थी कि आदमी की जिंदगी ज्यादा आराम से कटने लगी । खेती से जमीन में अनाज पैदा करना, सारे दिन शिकार खेलने से कहीं ज्यादा आसान था । इसके सिवा जमीन में अनाज भी इतना पैदा होता था जितना वे एकदम खा

परिचय

जन्म : १८८९, इलाहाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : २७ मई १९६४ (नई दिल्ली)
परिचय : स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू चिंतक, वक्ता, लेखक और विचारक थे। नेहरू जी ने आधुनिक भारत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की । आपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास को प्रोत्साहित किया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक आत्मकथा', 'दुनिया के इतिहास का स्थूल दर्शन', 'भारत की खोज', 'पिता के पत्र पुत्री के नाम', आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पत्र पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुत्री इंदिरा को लिखा है । इस पत्र में आदिम अवस्था से आगे बढ़कर खेती के माध्यम से हुए मानवीय सभ्यता के क्रमिक विकास को बताया गया है। यहाँ नेहरू जी ने अमीर-गरीब के मानदंड एवं बचत प्रणाली को सुंदर ढंग से समझाया है।

नहीं सकते थे, इसे वे सुरक्षित रखते थे । एक और मजे की बात सुनो। जब आदमी निपट शिकारी था तो वह कुछ जमा न कर सकता था या कर भी सकता था तो बहुत कम, किसी तरह पेट भर लेता था। उसके पास बैंक न थे, जहाँ वह अपने रुपये व दूसरी चीजें रख सकता । उसे तो अपना पेट भरने के लिए रोज शिकार खेलना पड़ता था । खेती से उसे एक फसल में जरूरत से ज्यादा मिल जाता था । अतिरिक्त खाने को वह जमा कर देता था । इस तरह लोगों ने अतिरिक्त अनाज जमा करना शुरू किया । लोगों के पास अतिरिक्त अनाज इसलिए हो जाता था कि वह उससे कुछ ज्यादा मेहनत करते थे जितना सिर्फ पेट भरने के लिए जरूरी था । तुम्हें मालूम है कि आज-कल बैंक खुले हुए हैं जहाँ लोग रुपये जमा करते हैं और चेक लिखकर निकाल सकते हैं। यह रुपया कहाँ से आता है? अगर तुम गौर करो तो तुम्हें मालूम होगा कि यह अतिरिक्त रुपया है, यानी ऐसा रुपया जिसे लोगों को एक बारगी खर्च करने की जरूरत नहीं है । इसे वे बैंक में रखते हैं । वही लोग मालदार हैं जिनके पास बहुत-सा अतिरिक्त रुपया है और जिनके पास कुछ नहीं वे गरीब हैं । आगे तुम्हें मालूम होगा कि यह अतिरिक्त रुपया आता कहाँ से है । इसका सबब यह नहीं है कि आदमी दूसरे से ज्यादा काम करता है और ज्यादा कमाता है बल्कि आज-कल जो आदमी बिलकुल काम नहीं करता उसके पास तो बचत होती है और जो पसीना बहाता है उसे खाली हाथ रहना पड़ता है । कितना बुरा इंतजाम है । बहुत से लोग समझते हैं कि इसी बुरे इंतजाम के कारण दुनिया में आज-कल इतने गरीब आदमी हैं । अभी शायद तुम यह बात समझ न सको इसलिए इसमें सिर न खपाओ । थोड़े दिनों में तुम इसे समझने लगोगी ।

इस वक्त तो तुम्हें इतना ही जानना पर्याप्त है कि खेती से आदमी को उससे ज्यादा खाना मिलने लगा जितना वह खा नहीं सकता था, यह जमा कर लिया जाता था। उस जमाने में न रुपये थे, न बैंक। जिनके पास बहुत-सी गायें, भेड़ें, ऊँट या अनाज होता था, वे ही अमीर कहलाते थे।

तुम्हारा पिता,
जवाहरलाल नेहरू

पठनीय

बालवीर पुरस्कार प्राप्त बच्चों की कहानियाँ पढ़ो ।

लेखनीय

वन महोत्सव जैसे प्रसंग की कल्पना करते समय विशेष उद्धरणों, वाक्यों का प्रयोग करके आठ से दस वाक्य लिखो।

संभाषणीय

'जय जवान, जय किसान' नारे पर अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत करो ।

श्रवणीय

रेडियो/दूरदर्शन पर जैविक खेती के बारे में जानकारी सुनो और सुनाओ ।

शब्द वाटिका

कस्बा = गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती

चरागाह = जानवरों के चरने की जगह

मुहावरे

खाली हाथ रहना = पास में कुछ न होना

सिर खपाना = बहुत बुद्धि लगाना

पसीना बहाना = कड़ी मेहनत करना

✻ **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

मनुष्य द्वारा खेती करने पर हुए लाभ
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) कारण लिखो :

अ. अनाज सुरक्षित रखना प्रारंभ हुआ -------

ब. मनुष्य को रोज शिकार खेलना पड़ता -------

क. दुनिया में गरीब आदमी हैं -------

ड. लोग बैंक में रुपये रखते -------

(३) उचित जानकारी लिखो :–

१. काम का विभाजन इनमें हुआ < [ ] [ ]

(४) कृति पूर्ण करो :

उस जमाने में उसे अमीर कहा जाता था जिसके पास... थे

[ ] [ ] [ ] [ ]

भाषा बिंदु

(१) शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखो :

क. जानवरों को चराने की जगह = -------

ख. जिनके पास बहुत से अतिरिक्त रुपये हैं = -------

(२) वाक्य शुद्‌ध करके लिखो :

क. बड़े दुखी लग रहे हो क्या हुआ

ख. अरे रामू के बापू घोड़े बेचकर सो रहे हो

ग. तुम्हारे दाने कहा है

मौलिक सृजन

कृषि क्षेत्र में किए गए नये-नये प्रयोगों से होने वाले लाभ लिखो ।

उपयोजित लेखन

'तंबाकू सेवन के दुष्परिणाम' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

पारंपरिक तथा आधुनिक कृषि प्रौद्‌योगिकी का तुलनात्मक चार्ट बनाओ ।

J114XB

६. अंधायुग

– डॉ. धर्मवीर भारती

युयुत्सु : होती होगी वधिकों की मुक्ति
प्रभु के मरण से
किंतु रक्षा कैसे होगी अंधे युग में
मानव भविष्य की
प्रभु के इस कायर मरण के बाद ?

अश्वत्थामा : कायर मरण ?
मेरा था शत्रु वह
लेकिन कहूँगा मैं
दिव्य शांति छाई थी
उसके स्वर्ण मस्तक पर !

वृद्‌ध : बोले अवसान के क्षणों में प्रभु –
''मरण नहीं है ओ व्याध !
मात्र रूपांतरण है यह
सबका दायित्व लिया मैंने अपने ऊपर
अपना दायित्व सौंप जाता हूँ मैं सबको
अब तक मानव भविष्य को मैं जिलाता था
लेकिन इस अंधे युग में मेरा एक अंश
निष्क्रिय रहेगा, आत्मघाती रहेगा
और विगलित रहेगा
संजय, युयुत्सु, अश्वत्थामा की भाँति
क्योंकि इनका दायित्व लिया है मैंने !''

बोले वे –
''लेकिन शेष मेरा दायित्व लेंगे
बाकी सभी ....

परिचय

जन्म : १९२६, इलाहाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : १९९७, मुंबई (महाराष्ट्र)
परिचय : भारती जी आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि नाटककार और सामाजिक विचारक थे । आपको १९७२ में पद्‌मश्री से सम्मानित किया गया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'स्वर्ग और पृथ्वी', 'चाँद और टूटे हुए लोग', 'बंद गली का आखिरी मकान', 'ठंडा लोहा', 'सातगीत', 'कनुप्रिया', 'सपना अभी भी', 'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'ग्यारह सपनों का देश', 'पश्यंती', 'अंधायुग' आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत अंश डॉ. धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' गीतिनाट्य से लिया गया है । इसमें युद्ध के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन की विभीषिका का चित्रण किया गया है । अंधायुग में युद्ध तथा उसके बाद की समस्याओं और मानवीय महत्त्वाकांक्षा को प्रस्तुत किया गया है । यह दृश्य काव्य है । इसका कथानक महाभारत युद्ध के समाप्ति काल से शुरु होता है ।

यहाँ प्रसंग उस समय का है जब श्रीकृष्ण की जीवनयात्रा समाप्त हो गई है । डॉ. भारती जी वृद्ध के मुख से कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने अपना संपूर्ण उत्तरदायित्व पृथ्वी के हर प्राणी को सौंप दिया है । सभी को अपने मर्यादायुक्त आचरण, सृजन, साहस-निर्भयता एवं ममत्वपूर्ण व्यवहार करने होंगे । मानव-जीवन उसके ही हाथों में है । वह चाहे तो उसे नष्ट कर दे अथवा जीवन प्रदान करें ।

कल्पना पल्लवन

'मनुष्य का भविष्य उसके हाथों में है' अपने विचार लिखो ।

मेरा दायित्व वह स्थित रहेगा
हर मानव मन के उस वृत्त में
जिसके सहारे वह
सभी परिस्थितियों का अतिक्रमण करते हुए
नूतन निर्माण करेगा पिछले ध्वंसों पर !
मर्यादायुक्त आचरण में
नित नूतन सृजन में
निर्भयता के
साहस के
ममता के
रस के
क्षण में
जीवित और सक्रिय हो उठूँगा मैं बार-बार !''

अश्वत्थामा : उसके इस नये अर्थ में
क्या हर छोटे-से-छोटा व्यक्ति
विकृत, अद्‌र्धबर्बर, आत्मघाती, अनास्थामय
अपने जीवन की सार्थकता पा जाएगा ?

वृद्‌ध : निश्चय ही !
वे हैं भविष्य
किंतु हाथ में तुम्हारे हैं ।
जिस क्षण चाहो उनको नष्ट करो
जिस क्षण चाहो उनको जीवन दो, जीवन लो ।

——o——

शब्द वाटिका

वधिक = वध करने वाला
कायर = डरपोक
ध्वंस = विनाश
सृजन = निर्माण
बर्बर = असभ्य, हिंसक
आत्मघाती = आत्महत्या करने वाला

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) कृति करो :

१. [ ] — वृद्ध ने इनका दायित्व लिया है — [ ]

२. [ ] — अंधे युग में प्रभु का एक अंश — [ ]

(२) संजाल पूर्ण करो :

अश्वत्थामा के अनुसार नये अर्थ में व्यक्ति — [ ] [ ] [ ] [ ]

(३) उत्तर लिखो :

कविता में प्रयुक्त पात्र — ______ ______ ______

भाषा बिंदु

१. पाठों में आए मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अपने स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो :

२. पढ़ो और समझो :

वर्ण विच्छेद		वर्ण विच्छेद	
मानवीय	म्+आ+न्+अ+व्+ई+य्+अ	वाक्य	----------------
सहायता	स्+अ+ह्+आ+य्+अ+त्+आ	शब्द	----------------
मृदुल	म्+ऋ+द्+उ+ल्+अ	व्यवहार	----------------

J19ZYY

स्वयं अध्ययन 'कर्म ही पूजा है', विषय पर अपने विचार सौ शब्दों में लिखो ।

मैंने समझा

उपयोजित लेखन निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दो ।

एक गाँव — दर्जी की दुकान — प्रतिदिन हाथी का दुकान से होकर नदी पर नहाने जाना — दर्जी का हाथी को केला खिलाना

एक दिन दर्जी को मजाक सूझना — दर्जी द्वारा हाथी को सुई चुभाना — परिणाम — शीर्षक

७. स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है

-लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक

परिचय

जन्म : १८५६, दापोली, रत्नागिरि (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १९२०, मुंबई (महाराष्ट्र)
परिचय : बाळ गंगाधर टिळक जी एक शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रसिद्ध वकील थे । आप देश के पहले ऐसे स्वतंत्रता सेनानी रहे , जिन्होंने पूर्ण स्वराज की माँग करके अंग्रेजों के मन में खौफ पैदा कर दिया था । जनसमाज ने आपको 'लोकमान्य' की उपाधि दी ।
प्रमुख कृतियाँ : 'गीता रहस्य', 'वेदकाल का निर्णय', आर्यों का मूल निवास स्थान', 'वेदों का काल निर्णय और वेदांग ज्योतिष' आदि।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत भाषण में टिळक जी ने 'स्वराज्य के अधिकार' को आत्मा की तरह अजर-अमर बताया है । यहाँ टिळक जी ने राजनीति, धर्म, स्वशासन आदि का विस्तृत विवेचन किया है। प्रस्तुत पाठ से स्वराज्य के प्रति टिळक जी की अटूट प्रतिबद्धता दिखाई पड़ती है ।

मौलिक सृजन

टिळक जी द्वारा संपादित/ प्रकाशित 'केसरी' समाचार पत्र की जानकारी संक्षेप में लिखो ।

मैं यद्‌यपि शरीर से बूढ़ा, किंतु उत्साह में जवान हूँ । मैं युवावस्था के इस विशेषाधिकार को छोड़ना नहीं चाहता । अपनी विचार शक्ति को सबल बनाने से इनकार करना, यह स्वीकार करने के समान होगा कि मुझे इस प्रस्ताव पर बोलने का कोई अधिकार नहीं है ।

अब मैं जो कुछ बोलने जा रहा हूँ, वह चिर युवा है । शरीर बूढ़ा-जर्जर हो सकता है और नष्ट भी हो सकता है, परंतु आत्मा अमर है । उसी प्रकार, हमारी होमरूल गतिविधियों में भले ही सुस्ती दिखाई दे, उसके पीछे छिपी भावना अमर एवं अविनाशी है । वही हमें स्वतंत्रता दिलाएगी । आत्मा ही परमात्मा है और मन को तब तक शांति नहीं मिलेगी, जब तक वह ईश्वर से एकाकार न हो जाए । स्वराज्य मेरा जन्मसिद्‌ध अधिकार है । जब तक वह मेरे भीतर जाग्रत है, मैं बूढ़ा नहीं हूँ । कोई हथियार इस भावना को काट नहीं सकता, कोई आग इसे जला नहीं सकती, कोई जल इसे भिगो नहीं सकता, कोई हवा इसे सुखा नहीं सकती ।

मैं उससे भी आगे बढ़कर कहूँगा कि कोई सी.आई.डी. पुलिस इसे पकड़ नहीं सकती । मैं इसी सिद्‌धांत की घोषणा पुलिस अधीक्षक, जो मेरे सामने बैठे हैं, के सामने भी करता हूँ, कलेक्टर के सामने भी, जिन्हें इस सभा में आमंत्रित किया गया था और आशुलिपि लेखक, जो हमारे भाषणों के नोट्स लेने में व्यस्त हैं, के सामने भी । हम स्वशासन चाहते हैं और हमें मिलना ही चाहिए । जिस विज्ञान की परिणति स्वशासन में होती है, वही राजनीति विज्ञान है, न कि वह, जिसकी परिणति दासता में हो । राजनीति का विज्ञान इस देश के 'वेद' हैं ।

आपके पास एक आत्मा है और मैं केवल उसे जगाना चाहता हूँ । मैं उस परदे को हटा देना चाहता हूँ, जिसे अज्ञानी, कुचक्री और स्वार्थी लोगों ने आपकी आँखों पर डाल दिया है । राजनीति के,

विज्ञान के दो भाग हैं-पहला दैवी और दूसरा राक्षसी । एक राष्ट्र की दासता दूसरे भाग में आती है । राजनीति-विज्ञान के राक्षसी भाग का कोई नैतिक औचित्य नहीं हो सकता । एक राष्ट्र जो उसे उचित ठहराता है, ईश्वर की दृष्टि में पाप का भागी है ।

कुछ लोगों में उस बात को बताने का साहस होता है, जो उनके लिए हानिकारक है और कुछ लोगों में यह साहस नहीं होता । लोगों को इस सिद्धांत के ज्ञान से अवगत कराना चाहता हूँ कि राजनीति और धर्म, शिक्षा का एक अंग हैं । धार्मिक और राजनीतिक शिक्षाएँ भिन्न नहीं हैं, यद्यपि विदेशी शासन के कारण वे ऐसे प्रतीत होती हैं । राजनीति के विज्ञान में सभी दर्शन समाए हैं ।

इंग्लैंड भारत की सहायता से बेल्जियम जैसे छोटे से देश को संरक्षण देने का प्रयास कर रहा है, फिर वह कैसे कह सकता है कि हमें स्वशासन नहीं मिलना चाहिए ? जो हममें दोष देखते हैं, वे लोभी प्रकृति के लोग हैं परंतु ऐसे भी लोग हैं, जो परम कृपालु ईश्वर में भी दोष देखते हैं । हमें किसी बात की परवाह किए बिना अपने राष्ट्र की आत्मा की रक्षा करने के लिए कठोर प्रयास करने चाहिए । अपने उस जन्मसिद्ध अधिकार की रक्षा में ही हमारे देश का हित छिपा हुआ है । कांग्रेस ने स्वशासन का यह प्रस्ताव पास कर दिया है ।

प्रांतीय सम्मेलन कांग्रेस की ही देन है, जो उसके आदेशों का पालन करता है । इस प्रस्ताव को लागू कराने हेतु कार्य करने के लिए हम कृतसंकल्प हैं, चाहे ऐसे प्रयास हमें मरुभूमि में ही ले जाएँ, चाहे हमें अज्ञातवास में रहना पड़े, चाहे हमें कितने ही कष्ट उठाने पड़ें या अंत में चाहे जान ही गँवानी पड़े । श्रीरामचंद्र ने ऐसा किया था । उस प्रस्ताव को केवल तालियाँ बजाकर पास न कराएँ, बल्कि इस प्रतिज्ञा के साथ कराएँ कि आप उसके लिए काम करेंगे । हम सभी संभव संवैधानिक और विधिसम्मत तरीकों से स्वशासन की प्राप्ति के लिए कार्य करेंगे ।

जॉर्ज ने खुलकर स्वीकार किया है कि भारत के सहयोग के बिना इंग्लैंड अब चल नहीं सकता है । पाँच हजार वर्ष पुराने एक राष्ट्र के बारे में सारी धारणाएँ बदलनी होंगी । फ्रांसीसी रणभूमि में भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश सैनिकों की जान बचाकर अपनी बहादुरी का परिचय दिया है । हमें उन्हें बता देना चाहिए कि हम तीस करोड़ भारतीय साम्राज्य के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं ।

—०—

श्रवणीय

राष्ट्रीय त्योहारों पर आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा दिए गए वक्तव्य सुनो और मुख्य मुद्दे सुनाओ ।

संभाषणीय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध घोषवाक्यों की सूची बनाकर उनपर गुट में चर्चा करो ।

लेखनीय

राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत-प्रोत चार पंक्तियों की कविता लिखो ।

पठनीय

सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता पढ़ो ।

शब्द वाटिका

जर्जर = कमजोर
होमरूल = एक ऐतिहासिक आंदोलन
आशुलिपि = संकेत लिपि (शॉर्टहैंड)
नैतिक = नीति संबंधी
औचित्य = उपयुक्तता, उचित होने की अवस्था
कृतसंकल्प = जिसने पक्का संकल्प किया हो
मरुभूमि = बंजर भूमि, अनुपजाऊ भूमि
संवैधानिक = संविधान के अनुसार
अवगत कराना = परिचित कराना या बताना

मुहावरा

आँखों से परदा हटाना = वास्तविकता से अवगत कराना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) विधानों को पढ़कर गलत विधानों को सही करके लिखो :

१. टिळक जी ने कहा है कि, वे यद्‌यपि शरीर से जवान है किंतु उत्साह में बूढ़े हैं ।
२. प्रांतीय सम्मेलन अंग्रेजों की देन है ।

(२) टिप्पणी लिखो :

१. लोकमान्य टिळक
२. होमरूल

(३) उत्तर लिखो :

१. लोकमान्य टिळक जी द्‌वारा दिया गया नारा :
____

(४) कृति पूर्ण करो :

जन्मसिद्‌ध अधिकार की विशेषताएँ

१. ______
२. ______
३. ______
४. ______

भाषा बिंदु पाँच-पाँच सहायक और प्रेरणार्थक क्रियाओं का अपने स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन अपने विद्‌यालय में आयोजित 'स्वच्छता अभियान' का वृत्तांत लिखो । वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख आवश्यक है ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन पाठ में प्रयुक्त उद्‌धरण, सुवचन, मुहावरे, कहावतें, आलंकारिक शब्द आदि की सूची बनाकर अपने लेखन प्रयोग हेतु संकलन करो ।

J1IW1L

८. मेरा विद्रोह

– *सूर्यबाला*

किवाड़ धीरे-से सरकाकर दबे पाँव घर में दाखिल होने की कोशिश करता हूँ पर कोने में बैठे पिता जी की निगाहें मुझे दबोच लेती हैं-

'किधर गए थे ?'

'लॉन्ड्री में कपड़े देने ।'

'तुम्हारे कपड़े क्या रोज लॉन्ड्री में धुलते हैं ?'

'रोज कब जाते हैं ?'

'बकवास मत करो ! दिन भर सड़कों पर मटरगश्ती करते फिरते हो, अपने कपड़े खुद नहीं धो सकते ?'

'हूँऽऽ !' मैं गुन्नाता हुआ ढीठ-सा अंदर आ जाता हूँ । मन तो करता है कि उनपर जवाबों के तीर चलाऊँ पर जानता हूँ-परिणाम वही होगा, उनका दहाड़ना-गरजना, मेरा कई-कई घंटों के लिए घर से गायब हो जाना और हफ्तों हम पिता-पुत्र का एक-दूसरे की नजरों से बचना, सामना पड़ने पर मेरा ढिठाई से गुजर जाना, माँ का रोना-धोना और पूर्व कर्मों को दोष देते हुए लगातार बिसूरते चले जाना ।

ठीक-ठीक याद नहीं आता कि यह सिलसिला कब से और कैसे शुरू हुआ । मैंने तो अपने आपको जब से जाना, ऐसा ही विद्रोही, उद्दंड और ढीठ । बचपन मेरे लिए बिलकुल एक शहद के प्याले जैसा ही था जिसे होंठों से लगाते-लगाते ही पिता की महत्त्वाकांक्षा का जहर उस प्याले में घुल गया था ।

अभी भी वह दिन याद आता है, जब माँ ने बाल सँवारे, किताबों का नया बैग मेरे कंधों पर लटका, मुझे पिता जी के साथ साइकिल पर बिठाकर स्कूल भेजा था । पिता जी तमाम दौड़-धूप कर मुझे कॉन्वेंट में दाखिल करा पाने में सफल हो गए थे ।

मैं अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने लगा । घर में पूरी तौर से हिंदी वातावरण, क्लास के जिन बच्चों के घरेलू माहौल भी अंग्रेजियत से युक्त थे, उनपर ही शिक्षिकाएँ भी शाबाशी के टोकरे उछालतीं क्योंकि वे छोटी उम्र में ही धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते । कक्षा में उन्हीं लड़कों का दबदबा रहता ।

माँ मुझे अच्छी तरह पढ़ा सकती थीं पर अंग्रेजी माध्यम होने की वजह से लाचार थीं । अतः सारी मेहनत पिता जी ही करते । मेरी इच्छा नहीं रहती थी उनसे पढ़ने की । मगर माँ की बात नहीं टाल सकता था । ऑफिस से आने के साथ ही सारी किताब-कॉपियों सहित मुझे

परिचय

जन्म : १९४३, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : समकालीन व्यंग्य एवं कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट भूमिका और महत्त्व रखने वाली सूर्यबाला जी ने अभी तक १५० से अधिक कहानियाँ, उपन्यास और हास्य-व्यंग्य संबधित रचनाओं का लेखन कार्य किया है। आपको 'प्रियदर्शिनी पुरस्कार', 'घनश्यामदास सराफ पुरस्कार', 'व्यंग्य श्री' आदि अनेक पुरस्कार, सम्मान प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मेरे संधि पत्र', 'अग्निपाखी', 'यामिनी-कथा', 'इक्कीस कहानियाँ' आदि ।

गद्‍य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में सूर्यबाला जी ने बालमन की लालसाओं, पिता की महत्वाकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इस पाठ में आपने बताया है कि किस तरह पिता की आकांक्षाओं से दबकर बालक-बालिकाओं की लालसाएँ दम तोड़ देती हैं । परिणामस्वरूप बच्चे विद्रोही बन जाते हैं और जब तक उन्हें समझ आती है तब तक काफी देर हो चुकी होती है । अतः हमें इन स्थितियों से बचना चाहिए ।

मौलिक सृजन

अपने जीवन में पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका को अधोरेखित करते हुए कृतज्ञता ज्ञापन करने वाला पत्र लिखो ।

श्रवणीय

रेडियो, दूरदर्शन, यू ट्यूब से शौर्य कथा/गीत सुनो और सुनाओ ।

घेरकर पढ़ाना-रटाना शुरू कर देते । शायद उनकी मेहनत के ही बल पर मैं आठवीं कक्षा तक पहुँचा हूँ ।

एक बार पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही थी । पिता जी ने मना किया । मेरे जिद करने पर माँ और पिता जी में भी झिक-झिक होने लगी । मैं अड़ा ही रहा । परिणामस्वरूप पहले समझाया, धमकाया और डाँटा गया और सबसे आखिर में दो चाँटे लगाकर नालायक करार दिया गया । मैं बड़ा क्रोधित हुआ ।

कभी 'डोनेशन' या सालाना जलसे आदि के लिए चंदे वगैरह की छपी पर्चियाँ लाता तो पिता जी झल्ला पड़ते । एक-दो रुपये देते भी तो मैं अड़ जाता कि बाकी लड़के दस-दस, बीस-बीस रुपये लाते हैं, मैं क्यों एक-दो ही ले जाऊँ ? मैंने इस बारे में माँ से बात की पर माँ भी इसे फिजूल खर्चा मानती थीं ।

रमन की 'वर्षगाँठ' की बात तो मैं कभी भूल ही नहीं सकता । सबसे पहले उसने मुझे ही बताया था कि अगले महीने उसकी वर्षगाँठ है । मैं अंदर-बाहर एकदम खुशी से किलकता घर पहुँचा था । मैं शायद रमन से भी ज्यादा बेसब्री से उसकी वर्षगाँठ का इंतजार कर रहा था; क्योंकि रमन ने अपनी वर्षगाँठ की तैयारियों का जो चित्र खींचा था, उसने मुझे पूरे एक महीने से बेचैन कर रखा था ।

लेकिन उस दिन पिता जी ने मुझे एकदम डपट दिया-''नहीं जाना है ।'' मैंने जोर-जोर से लड़ना, जिद मचाना और रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया । गुस्से में पिता जी ने एक भरपूर थप्पड़ गालों पर जड़ दिया । गाल पर लाल निशान उभर आए । उस दिन पहली बार माँ ने मेरे गालों पर उँगलियाँ फेर रो पड़ी थीं और पिता जी से लड़ पड़ी थीं । पिता जी को भी शायद पछतावा हुआ था । माँ ने मेरा मुँह धुलाया, गाल पर दवा लगाई और बाजार से बिस्कुट का एक डिब्बा मँगाकर पिता जी के साथ रमन के घर भिजवा दिया ।

रमन के पापा दरवाजे पर ही मिल गए थे । खूब खुश होकर उन्होंने रमन को बुलाया । फिर उनकी दृष्टि गालों पर पड़ी । पिता जी जल्दी से बोले, ''आते-आते सीढ़ियों से गिर गया ... पर मैंने कहा, ''तुम्हारे दोस्त का जन्मदिन है, जरूर जाओ ।''

मेरा दिमाग गुस्से से पागल हो गया । मन किया, जोर से चीख पड़ूँ । रमन के पापा के सामने ही-कि ये झूठे, मक्कार और निर्दयी हैं, मुझे

पीटकर लाए हैं और यहाँ झूठ बोल रहे हैं । बोला कुछ नहीं, बस गुस्से से उन्हें घूरता रमन की उँगली पकड़े अंदर चला गया ।

अंदर जाकर तो मुझे लगा कि मैं लाल परी के जादुई देश में आ गया हूँ । ढेर-के-ढेर झूलते रंग-बिरंगे गुब्बारे, रिबंस, प्रेजेंट्स, ट्रॉफियाँ-गुलदस्ते-सा सज्जा, उल्लास से हमेशा हँसते-से उसके मम्मी-डैडी । घर लौटकर मैंने पहला प्रश्न माँ से यही किया-'तुम और पिता जी मेरा जन्मदिन क्यों नहीं मनाते ?'

उत्तर में पिता जी की झिड़की ने उसके प्रति उपेक्षा व आक्रोश को और भी बढ़ा दिया । शायद धीरे-धीरे इसी उपेक्षा और आक्रोश का स्थान विद्रोह लेने लगा । अनजाने में मेरे अंदर पिता जी का एक शत्रु पैदा हो गया, जो हर समय पिता जी को तंग करने, दुखी करने और उनसे अपने प्रति किए गए अन्यायों के विरुद्ध बदला लेने की स्कीमें बनाता । चूँकि पिता जी और पढ़ाई एक-दूसरे के पर्यायवाची बन गए थे, अतः पढ़ाई से भी मुझे उतनी ही चिढ़ हो गई थी जितनी पिता जी से ।

घर में छोटी बहन शालू और उससे छोटे मंटू के आगमन के साथ ही तंगहाली और भी बढ़ गई थी, शायद इसी वजह से मैं ज्यादा विद्रोही हो गया था । अब बात-बात पर पिटना एक आम बात हो गई थी । धीरे-धीरे पिटने का डर भी दिमाग से काफूर हो गया और मैं दुस्साहसी हो पिता जी के हाथ उठाते ही घर से भाग खड़ा होता ।

बस पढ़ाई पिछड़ती गई । फर्स्ट आने लायक शायद नहीं था पर सामान्य लड़कों से अच्छे नंबर तो मैं आसानी से ला सकता था । पढ़ाई से तो मुझे शत्रुता हो गई थी । पिता जी से बदला लेने के लिए अपना कैरियर चौपट करने तक में मुझे एक मजा मिलता, लगता पिता जी को नीचा दिखाने का इससे अच्छा उपाय दूसरा नहीं हो सकता ।

मुझे याद है कि पाँचवीं कक्षा में सातवीं पोजीशन लाने के बाद छठी कक्षा में मैं मेहनत करके थर्ड आया था सोचा था, पिछले साल से अच्छे नंबर लाने पर पिता जी खुश होंगे पर वे रिपोर्ट देखते ही खीझे थे-'चाहे कितना भी घोलकर पिला दूँ, पर तू रहेगा थर्ड -का-थर्ड ही ।' मेरा मन अपमान से तिलमिला गया । सोचा, चीखकर कहूँ-'अगले साल मैं फेल होऊँगा फेल ।'

अक्सर पेपर देकर लौटने पर इम्तहान का बोझ टलने की खुशी में उमंगता से घर लौटता तो बैठक में ही पिता जी मिलते-''कैसा किया पेपर ?'' मैं खुश होकर कहता, 'अच्छा' पर पिता जी के होंठ बिदक जाते, ''कह तो ऐसे रहे हो जैसे फर्स्ट ही आओगे ।''

खीझकर पेपर देकर लौटने पर तो खास तौर से उनका सामना करने

संभाषणीय

'भारत की संपर्क भाषा हिंदी है', इस कथन पर विचार करते हुए अपना मत प्रस्तुत करो ।

से कतराता, चिढ़ता और माँ के सामने भुन-भुनाकर अपना आवेश व्यक्त करता । शालू मुझे बच्ची लगती थी; पर जब से थोड़ी बड़ी होने के साथ उसने पिता जी-माँ का कहना मानना, उनसे डरना शुरू कर दिया है, मुझे उस चमची से चिढ़ हो गई है । नन्हे मंटू को गोद में लेकर उछालने-खेलाने की तबीयत होती है पर पिता जी उसे प्यार करते हैं, यह सोचकर ही मुझे उसे रोते रहने देने में शांति मिलती है ।

इस महीने पैसे की ज्यादा परेशानी है-टेरीकॉट की कड़क कॉलरवाली बुश्शर्ट जरूर सिलवाऊँगा, मेरे पास घड़ी क्यों नहीं है ? बिना घड़ी के परीक्षा नहीं दूँगा, साइकिल पंक्चर हो गई तो बस नहीं, ऑटोरिक्शा से किराया देकर घर लौटूँगा, हिप्पी कट बाल कटाऊँगा, माथे पर फुलाकर सँवारूँगा ... कर लें, जो कर सकते हों मेरा । हूँ ऽऽ ......

कई बार मन करता है-कोशिश करके एक बार फर्स्ट आ ही जाऊँ, लेकिन तभी अंदर से कोई चीखता है-नहीं, यह तो पिता जी की जीत हो जाएगी । वे इसे अपनी ही उपलब्धि समझेंगे; और ... और खुश भी तो होंगे, मेरा उनकी खुशी से क्या वास्ता ? अब उनका और कुछ वश नहीं चलता तो माँ को सुनाकर दहाड़ते हैं- ''ठीक है, मत पढ़े-लिखे । करे सारे दिन मटरगश्ती । मैं भी इस इम्तहान के बाद किसी कुली-कबाड़ी के काम पर लगा देता हूँ ।''

यही देख लीजिए, अभी नुक्कड़ की दुकान पर कुछ खरीदने आया ही था कि अचानक पिता जी सड़क से गुजरते दीखे । जानता हूँ, घर पर पहुँचकर खूब गरजेंगे-दहाड़ेंगे । लेकिन बाहरी दरवाजे पर आकर सन्न रह जाता हूँ । पिता जी को लगा कि उनके बेटे का भविष्य बरबाद हो गया है यह सोचकर वे गलियारे में खड़े-खड़े दीवार से कोहनियाँ टिकाए निश्शब्द कातर रो रहे हैं । मैं सन्नाटे में खिंचा अवाक खड़ा रह जाता हूँ । पिता जी का ऐसा बेहद निराश, आकुल-व्याकुल रूप मैंने इसके पहले कभी नहीं देखा था । जिंदगी में पहली बार मैंने अपने पिता को इतना विवश, इतना व्यथित और इतना बेबस देखा तो क्या पिता जी पहले भी कभी ऐसी ही अवश मजबूरियों के बीच रोए होंगे-मुझे लेकर ?

अब मुझे अपने किए पर पछतावा हुआ । पिता जी की दशा देखकर मैं मन-ही-मन दुखी हुआ । माँ से मिलकर मैंने सब कुछ बताया । आज माँ की खुशी का पारावार न था । उसने मुझे गले लगाया । उसकी आँखों से आँसू झरने लगे । वे दुख के नहीं खुशियों के थे । मेरी आँखों के विद्रोही अंगारे बुझने लगे हैं-मेरे अपने ही आँसुओं की धार से । मैं निःशब्द कह रहा हूँ-पिता जी ! मैं संधि चाहता हूँ । हाँ, मैं संधि चाहता हूँ ।

मैंने आपको गलत समझा, मुझे क्षमा कर दीजिए ।

—०—

पठनीय

किसी अंतरिक्ष यात्री की अंतरिक्ष यात्रा का अनुभव पढ़ो और चर्चा करो ।

लेखनीय

निम्नलिखित जगहों पर जाना हो तो तुम्हारा संपर्क किस भाषा से होगा लिखो :

चंडीगढ़	------
अहमदाबाद	------
पुरी	------
रामेश्वरम	------
श्रीनगर	------
पेरिस	------
टोकियो	------
ब्राजिल	------
बीजिंग	------
इजराइल	------

शब्द वाटिका

किलकना = खुशी में चिल्लाना
डपटना = डाँटना
मटरगश्ती = मौज में घूमना
पारावार = सीमा

मुहावरे

आपे से बाहर होना = बहुत क्रोधित होना
अवाक खड़ा रहना = अचंभित हो जाना
काफूर होना = गायब हो जाना
नीचा दिखाना = अपमानित करना
तिलमिला जाना = गुस्सा होना
चौपट करना = बरबाद करना
पारावार न रहना = सीमा न रहना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) एक शब्द में उत्तर लिखो :

१. बेटे की मातृभाषा :
२. बेटे की शिक्षा की माध्यम भाषा :

(२) संक्षेप में लिखो :

१. रमन के 'जन्मदिन' पर न जाने देने के बाद लड़के द्वारा किया गया विद्रोह :
२. नुक्कड़ की दुकान से घर लौटने पर बेटे द्वारा देखा दृश्य :

(३) कारण लिखो :

१. अंग्रेजियत वाले परिवारों के बच्चों का दबदबा रहता था –
२. पिता जी झल्ला पड़ते थे –
३. लड़के की माँ उसे पढ़ा नहीं पाती थी –

(४) ऐसे प्रश्न बनाओ जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

साइकिल, बेसब्री, छपी पर्चियाँ, पारावार

(५) संजाल पूर्ण करो :

लाल परी के जादुई देश की विशेषताएँ

भाषा बिंदु

पाठों में आए हुए उपसर्ग और प्रत्ययवाले शब्द ढूँढ़ो तथा उनके उपसर्ग/प्रत्यय अलग करके मूल शब्द लिखो ।

उपयोजित लेखन

निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन लिखो :

स्थल/जगह, संपर्क, पुस्तक मेला, दिनांक, समय

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

अब्राहम लिंकन द्वारा प्रधानाध्यापक को लिखे हुए पत्र का चार्ट बनाकर कक्षा में लगाओ ।

J15S39

९. नहीं कुछ इससे बढ़कर

– सुमित्रानंदन पंत

प्रसव वेदना सह जब जननी
हृदय स्वप्न निज मूर्त बनाकर
स्तन्यदान दे उसे पालती,
पग-पग नव शिशु पर न्योछावर
नहीं प्रार्थना इससे सुंदर !

शीत-ताप में जूझ प्रकृति से
बहा स्वेद, भू-रज कर उर्वर,
शस्य श्यामला बना धरा को
जब भंडार कृषक देते भर
नहीं प्रार्थना इससे शुभकर !

कलाकार-कवि वर्ण-वर्ण को
भाव तूलि से रच सम्मोहन
जब अरूप को नया रूप दे
भरते कृति में जीवन स्पंदन
नहीं प्रार्थना इससे प्रियतर !

सत्य-निष्ठ, जन-भू प्रेमी जब
मानव जीवन के मंगल हित
कर देते उत्सर्ग प्राण निज
भू-रज को कर शोणित रंजित
नहीं प्रार्थना इससे बढ़कर !

चख-चख जीवन मधुरस प्रतिक्षण
विपुल मनोवैभव कर संचित,
जन मधुकर अनुभूति द्रवित जब
करते भव मधु छत्र विनिर्मित
नहीं प्रार्थना इससे शुचितर !

— ० —

परिचय

जन्म : १९००, कौसानी, अल्मोड़ा, (उत्तराखंड)

मृत्यु : १९७७

परिचय : 'पंत' जी को प्रकृति से बहुत लगाव था । प्रकृति सौंदर्य के अनुपम चितेरे तथा कोमल भावनाओं के कवि के रूप में आपकी पहचान है । आप बचपन से सुंदर रचनाएँ किया करते थे । आपको 'भारतीय ज्ञानपीठ', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्‌मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया ।

प्रमुख कृतियाँ : 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'मानसी', 'वाणी', 'सत्यकाम' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने माँ, कृषक, कलाकार, कवि, बलिदानी पुरुष एवं लोक के महत्त्व को स्थापित किया है । आपका मानना है कि उपरोक्त सभी व्यक्ति, समाज, देश के हित में सदैव तत्पर रहते हैं । अतः इनकी पूजा से बढ़कर दूसरी कोई पूजा नहीं है ।

कल्पना पल्लवन

'मन:शांति के लिए चिंतन-मनन आवश्यक है' इसपर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

जननी = माँ
स्वेद = पसीना
भू-रज = मिट्‌टी
उर्वर = उपजाऊ
शस्य = नई कोमल घास
श्यामला = साँवली, हरी-भरी
कृषक = किसान
तूलि = कूँची, तूलिका
सम्मोहन = मोहित करना
स्पंदन = कंपन
उत्सर्ग = बलिदान
शोणित रंजित = रक्त से भीगा हुआ
विनिर्मित = बनाया हुआ
शुचितर = अधिक पवित्र

मुहावरा

न्योछावर करना = वारी जाना, समर्पित करना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

गीत की विशेषताएँ

(२) कृति करो :

----

१. धरती को उपजाऊ बनाने वाला

२.अनाज के भंडारों को भरने वाला

(३) अंतिम चार पंक्तियों का अर्थ लिखो ।

(४) कविता में उल्लिखित मानव के विभिन्न रूप लिखो:

१. -----------
२. -----------
३. -----------
४. -----------

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के लिंग तथा वचन बदलकर वाक्यों में प्रयोग करो :

लिंग - कवि, माता, भाई, लेखक
वचन - दुकान, प्रार्थना, अनुभूति, कपड़ा, नेता

उपयोजित लेखन

'सड़क दुर्घटनाएँ : कारण एवं उपाय' निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

'राष्ट्रसंत तुकडो जी के सर्वधर्मसमभाव' पर आधारित गीत पढ़ो और इसपर आधारित चार्ट बनाओ ।

J22N4H

व्याकरण विभाग

शब्द भेद

(१) विकारी शब्द और उनके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी शब्द(अव्यय)

क्रियाविशेषण अव्यय
संबंधसूचक अव्यय
समुच्चयबोधक अव्यय
विस्मयादिबोधक अव्यय

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(४) वाक्य के प्रकार

रचना की दृष्टि से

१. साधारण
२. मिश्र
३. संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से

१. विधानार्थक
२. निषेधार्थक
३. प्रश्नार्थक
४. आज्ञार्थक
५. विस्मयादिबोधक
६. संदेशसूचक

(५) मुहावरों/कहावतों का प्रयोग/चयन करना
(६) वाक्य शुद्धीकरण
(७) सहायक क्रिया पहचानना
(८) प्रेरणार्थक क्रिया पहचानना
(९) कारक
(१०) विरामचिह्न
(११) वर्णविच्छेद

शब्द संपदा – (पाँचवीं से आठवीं तक)

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्द युग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, समोच्चारित मराठी-हिंदी भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत-तद्धित बनाना, मूल शब्द अलग करना ।

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

✻ पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आजकल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

✻ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक ।

गद्‌य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• दिए गए परिच्छेद (गद्‌यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में हों ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ । • प्रश्न के उत्तर लिखना अपेक्षित नहीं है ।

✻ प्रश्न ऐसे हों : • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हो । • प्रश्न रचना और प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्‌यांश पर आधारित हो । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न समूचे परिच्छेद पर आधारित हों ।

मनुष्य को अपने जीवन की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए बहुत कुछ श्रम करना पड़ता है । इस श्रम से थके हुए मन और मस्तिष्क को विश्राम की आवश्यकता होती है, शरीर पर भी इस श्रम का प्रभाव पड़ता है । इसलिए वह भी विश्राम माँगता है किंतु यदि मनुष्य आलसी की भाँति सीधा चारपाई पर लेट जाए तो इससे वह थकान भले ही उतार ले, परंतु वह नया उत्साह नहीं पा सकता जो उसे अगले दिन फिर से काम करने की शक्ति प्रदान कर सके । यह तभी हो सकता है जब दिन भर के काम से थके मन को हँस-खेलकर बहला लिया जाए । आकर्षक गीत सुनकर या सुंदर दृश्य देखकर दिन भर पढ़ने अथवा सोचने से दिमाग पर जो प्रभाव पड़ा हो, उसे निकालकर मस्तिष्क को उस चिंता से दूर कर देना चाहिए । इसका परिणाम यह होगा कि मनुष्य पुनः विषय पर नई शक्ति से सोच-विचार कर सकेगा ।

प्रश्नः

१. ________________

२. ________________

३. ________________

४. ________________

५. ________________

✻ वृत्तांत लेखन : वृत्तांत का अर्थ है- घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है । **वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :** • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का उल्लेख अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्‌धति से हो ।

✻ कहानी लेखन : कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्‌धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्‌यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्‌दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख/प्रेरणा/संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्द सीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी का शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । • घटनाएँ शृंखलाबद्‌ध होनी चाहिए । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

✲ विज्ञापन : वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्त्वपूर्ण अंग है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्‌योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में जानकारी आकर्षक ढंग से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्‌देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्‌दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हो । • नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • किसी में उत्पाद संबंधी विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण होती है ।

✲ अनुवाद लेखन : एक भाषा का आशय दूसरी भाषा में लिखित रूप में व्यक्त करना ही अनुवाद कहलाता है । अनुवाद करते समय लिपि और लेखन पद्‌धति में अंतर आ सकता है परंतु आशय, मूलभाव को जैसे कि वैसे रखना पड़ता है ।

अनुवाद : शब्द, वाक्य और परिच्छेद का करना है ।

✲ निबंध लेखन : निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा 'सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्‌य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्‌य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है । वर्णनात्मक, विचारात्मक आत्मकथनपरक, चरित्रात्मक तथा कल्पनाप्रधान ये निबंध के पाँच प्रमुख भेद हैं ।

भावार्थ – पाठ्‌यपुस्तक पृष्ठ क्र. २३ पहली इकाई, पाठ क्र ९. दोहे और पद– संत कबीर, भक्त सूरदास

दोहे : कबीर दास जी कहते हैं कि जैसा भोजन करोगे वैसा ही मन होगा । यदि इमानदारी की कमाई खाओगे तो व्यवहार भी इमानदारी वाला ही होगा । बेइमानी के भोजन करने से मन में भी बेइमानी आएगी । उसी तरह जैसा पानी पीओगे वैसी भाषा भी होगी ।

मन के अहंकार को मिटाकर, ऐसे मीठे और नम्र वचन बोलो, जिससे दूसरे लोग सुखी हों और स्वयं भी सुखी हो ।

जब मैं इस दुनिया में बुराई खोजने निकला तो कोई बुरा नहीं मिला । पर फिर जब मैंने अपने मन में झाँककर देखा तो पाया कि दुनिया में मुझसे बुरा और कोई नहीं हैं ।

पद : बालक कृष्ण माँ यशोदा से कहते हैं कि मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी ? कितना समय मुझे दूध पीते हो गया पर यह चोटी आज भी छोटी ही बनी हुई है । तू तो यह कहती है कि दाऊ भैया की चोटी के समान यह लंबी और मोटी हो जाएगी और कंघी करते, गूँथते तथा स्नान कराते समय यह नागिन के समान भूमि तक लोटने (लटकने) लगेगी । तू मुझे बार-बार कच्चा दूध पिलाती है, माखन-रोटी नहीं देती है । सूरदास जी कहते हैं कि दोनों भाई चिरंजीवी हों और हरि-हलधर की जोड़ी बनी रहे ।

—— ० ——

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन अनुभव प्रक्रिया प्रारंभ करने से पहले पाठ्यपुस्तक में दी गई सूचनाओं, दिशा निर्देशों को भली-भाँति आत्मसात कर लें । भाषाई कौशल के विकास के लिए पाठ्यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', एवं 'लेखनीय' में दी गई है । पाठों पर आधारित कृतियाँ 'सूचना के अनुसार कृतियाँ करो' में आई हैं । पद्‌य में 'कल्पना पल्लवन', गद्‌य में 'मौलिक सृजन' के अतिरिक्त 'स्वयं अध्ययन' एवं 'उपयोजित लेखन' विद्‌यार्थियों के भाव/विचार विश्व, कल्पना लोक एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'मैंने समझा' में विद्‌यार्थियों ने पाठ पढ़ने के बाद क्या आकलन किया है, इसे लिखने के लिए प्रोत्साहित करना है । इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि प्रत्येक पाठ के अतंर्गत दी गई कृतियों, उपक्रमों एवं स्वाध्यायों के माध्यम से भाषा विषयक क्षमताओं का सम्यक विकास हो, अतः आप इसकी ओर विशेष ध्यान दें ।

'भाषा बिंदु' (भाषा अध्ययन) व्याकरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । सीधे परिभाषा न बताकर कृतियों और उदाहरणों द्‌वारा व्याकरण घटकों की संकल्पना तक विद्‌यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आपके सबल कंधों पर है । 'पूरक पठन' सामग्री कहीं-न-कहीं भाषाई कौशलों के विकास को ही पोषित करते हुए विद्‌यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः पूरक पठन का अध्ययन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषाई खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश भी अपेक्षित है । पाठों के माध्यम से नैतिक, सामाजिक, संवैधानिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों के विकास के अवसर भी विद्‌यार्थियों को प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, संदर्भों एवं स्वाध्यायों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । विद्‌यार्थी कृतिशील, स्वयंअध्ययनशील, गतिशील बने । ज्ञानरचना में वह स्वयंस्फूर्त भाव से रुचि ले सके, इसका आप सतत ध्यान रखेंगे, ऐसी अपेक्षा है ।

पूर्ण विश्वास है कि आप सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुलभभारती इयत्ता ८ वी

₹ 30.00